शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का राष्ट्रीय स्टाफ कालिज

वार्षिक रिपोर्ट
1977-78

NIEPA DC

D09358

17-वी, श्री अरविन्दो मार्ग, नई दिल्ली-110016

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No. D-9358
Date 5.12.96

विषय-सूची

प्रस्तावना 1

I. प्रशासन, निधि और वित्त

लक्ष्य और उद्देश्य 9

परिषद् 10

कार्यकारी समिति 10

निधियां और वित्त 11

छात्रावास 11

कर्मचारी वर्ग 11

II. कार्यक्रमों और क्रियाकलापों की समीक्षा

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों के लिए शैक्षणिक नियोजन संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम 15

तमिलनाडु के शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी प्रभिविन्यास कार्यक्रम 19

सिक्किम के विद्यालय प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम 21

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा के परिवीक्षाधीन प्रशिक्षणार्थी के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम 24

मध्य प्रदेश के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम 25

अण्डमान और निकोबार द्वीपों के विद्यालय प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन सम्बन्धी अभिविन्यास कार्यक्रम 28

अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन सम्बन्धी अभिविन्यास कार्यक्रम 31

राज्य शिक्षा योजना अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम 34

तमिलनाडु के महाविद्यालय के प्रधानाचार्यों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम 37

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए शैक्षिक संसाधनों के प्रबन्ध सम्बन्धी अभिविन्यास कार्यक्रम 40

भारत में विश्वविद्यालयों के वित्तीय अधिकारियों के लिए वित्तीय प्रबंधन में तीसरा प्रशिक्षण कार्यक्रम 43

राष्ट्रीय सेवा योजना के मुख्य कार्मिकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम 46

संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के एक चुने हुए समूह के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम 49

उच्चतर शिक्षा के कुछ पक्षों पर संगोष्ठी 51

संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के एक चुने हुए समूह के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम 52

संयुक्त राज्य अमरीका के सामाजिक अध्ययनों के अधीक्षकों तथा पाठ्यक्रम निदेशकों के लिए भारतीय इतिहास तथा संस्कृति में कार्यगोष्ठी 54

अफ़गानिस्तान सरकार के शिक्षा योजना विभाग के अध्यक्ष श्री एम० टी० प्रोजोश के लिए प्रेक्षण परिचर्चा कार्यक्रम 58

अफ़गानिस्तान तथा बर्मा के शिक्षा अधिकारियों के लिए अध्ययन-प्रेक्षण कार्यक्रम 59

सहभागी और विशेष व्यक्ति 61

प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन 62

अनुसंधान और अध्ययन शिक्षा प्रशासन का अखिल भारतीय सर्वेक्षण 63

भारत में शिक्षा के लिए स्थानीय सहयोग का प्रबंधन : एक केस अध्ययन 65

अंतर्राष्ट्रीय समझ, सहयोग और शांति के लिए शिक्षा तथा मानवीय अधिकारों और मूलभूत स्वतंत्रताओं से संबंधित शिक्षा 67

शैक्षणिक नियोजन और प्रबन्ध में पत्राचार पाठ्यक्रम 68

अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों के साथ सहयोग 69

पुस्तकालय और प्रलेखन सेवाएं 71

प्रकाशन 72

अभिस्वीकृति 75

परिशिष्ट

I. परिषद के सदस्य

II. कार्यसमिति के सदस्य

III. 1977-1978 की लेखा परीक्षा रिपोर्ट

IV. संकाय के सदस्य

V. स्टाफ में परिवर्तन

VI. प्रकाशनों की अद्यतन सूची

प्रस्तावना

शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालिज की स्थापना मुख्यतया शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन के क्षेत्र में प्रशिक्षण देने, संगोष्ठियाँ और सम्मेलन बुलाने, अनुसंधान करने, राज्य सरकारों को शैक्षणिक परामर्श देने, मांगे जाने पर अन्य देशों, विशेषकर एशियाई देशों, को प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान करने और इस क्षेत्र में अपेक्षित सूचनाओं के निकासी केन्द्र के रूप में कार्य करने के उद्देश्य से की गई थी।

राष्ट्रीय स्टाफ कालिज संस्था पंजीकरण अधिनियम (अधिनियम सं० 21, 1860) के अंतर्गत पंजीकृत एक स्वायत्त संस्था है। इसका पंजीकरण 31-12-1970 को हुआ था।

प्रस्तुत रिपोर्ट में उक्त स्टाफ कालिज में 1977-78 के दौरान हुए मुख्य-मुख्य क्रियाकलापों और कार्यक्रमों की समीक्षा की गई है।

नए आयाम

समीक्षाधीन अवधि में स्टाफ कालिज ने पर्वतीय ज़िलों तथा राज्य शिक्षा योजना अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए प्रशिक्षण संसाधनों संबंधी प्रबंध-कार्यक्रमों, संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालय के प्रधानाचार्यों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों, तथा संयुक्त राज्य अमरीका के अधीक्षकों तथा पाठ्यचर्या निदेशकों के लिए भारतीय इतिहास तथा संस्कृति में कार्यगोष्ठी का आयोजन करके नए कार्यों का भी सूत्रपात किया। इन कार्यों की विशिष्टियां संक्षेप में इस प्रकार हैं;-

(क) उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों के लिए शैक्षणिक-नियोजन संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम

विकास के प्रभावी साधनों/उपकरण की खोज करने और उन्हें स्थापित करने के उद्देश्य से भीमताल में पर्वतीय जिलों के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पाठ्यक्रम का मुख्य भाग उद्दीपन और भूमिका-निर्वाह तकनीकों पर आधारित व्यावहारिक अभ्यास था जिसका उद्देश्य नैनीताल के पर्वतीय ज़िले के भीमताल खंड की शैक्षणिक विकास योजना की रूप रेखा तैयार करना था।

(ख) राज्य-शिक्षा योजना अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिक्षा की अगली पाँच वर्षीय योजना तैयार करने के कार्य में अपनी तकनीकी दक्षता को समुन्नत करने के लिए शिक्षा के विविध क्षेत्रों से संबंधित राज्य-शिक्षा योजना

अधिकारियों के लिए तीन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। भाग लेने वालों ने विविध क्षेत्रों में अपने राज्य की योजना का "शून्य प्रारूप" (zero draft) तैयार किया और अंतरानुभागीय संपर्कों के लिए आवश्यकताओं की खोज की।

(ग) शैक्षणिक संसाधनों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

यह कार्यक्रम मुख्यतया केन्द्रीय विद्यालय संगठन के प्रधानाचार्यों के लिए आयोजित किया गया था जिसमें परिचर्चायें, समूह-बैठकें तथा क्षेत्रवीक्षण सम्मिलित थे। सामान्य रूप से शिक्षण प्रबन्धन, शैक्षणिक तथा गैर-शैक्षणिक संसाधनों का प्रबंध, परिचर्चाओं के मुख्य विषय थे।

(घ) संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालय के प्रधानाचार्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारत में संयुक्त राज्य शिक्षा-प्रतिष्ठान की माँग पर संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले प्रधानाचार्यों को अमरीका की उच्चतर शिक्षा प्रणाली से परिचित करवाने के लिए तथा अन्य बातों के साथ-साथ भारत तथा संयुक्त राज्य अमरीका में उच्च शिक्षा के विकास की आधुनिक प्रवृत्तियों की तुलना करने के लिए ऐसे दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।

(ङ) संयुक्त राज्य अमरीका के अधीक्षकों तथा पाठ्यचर्या निदेशकों के लिए भारतीय इतिहास तथा संस्कृति में कार्य गोष्ठी

भारत में संयुक्त राज्य शिक्षा-प्रतिष्ठान की मांग पर संयुक्त राज्य अमरीका के सामाजिक अध्ययन के अधीक्षकों तथा पाठ्यचर्या-निदेशकों को भारतीय इतिहास और संस्कृति के विभिन्न पक्षों और भारत के शिक्षा और विकास की मुख्य प्रवृत्तियों से परिचित करवाने तथा इनके द्वारा दोनों देशों के बीच आपसी जानकारी बढ़ाने के लिए चार सप्ताह की कार्यगोष्ठी आयोजित की गई।

प्रस्तुत रिपोर्ट दो भागों में विभाजित है। भाग-1 में प्रशासन, निधि और वित्त संबंधी स्थिति बताई गई है और भाग-2 में समीक्षाधीन उक्त अवधि में कालिज के क्रिया-कलापों और कार्यक्रमों का संक्षिप्त सार दिया गया है। मुख्य क्रियाकलापों की सूची नीचे दी गई है :-

1-4-77 से 31-3-78 की अवधि में कार्यक्रमों की सूची

1. क्रम संख्या	प्रशिक्षण कार्यक्रम	अवधि	सहभागियों की संख्या
—	उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों के लिए प्रादेशिक शैक्षणिक नियोजन सबंधी कार्यक्रम ।	5 मई से 14 मई, 1977 तक	25
—	तमिलनाडु के शिक्षा अधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम ।	23 मई से 28 मई, 1977 तक	16
—	सिक्किम के विद्यालयों प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम ।	2 जून से 14 जून, 1977 तक	25
—	उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा के परिवीक्षाधीन प्रशिक्षणार्थी के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम ।	3 अगस्त से 16 अगस्त, 1977 तक	1
—	भोपाल में मध्य प्रदेश के प्रथम श्रेणी के शिक्षा अधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम ।	3 अक्तूबर से 13 अक्तूबर, 1977 तक	20
—	पोर्टब्लेर में अंडमान और निकोबार द्वीपों के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम ।	26 अक्तूबर से 7 नवम्बर, 1977 तक	28
—	अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम ।	15 दिसम्बर से 24 दिसम्बर, 1977 तक	29
2.	राज्य-शिक्षा योजना अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम ।		
—	राज्य लिक्षा योजना अधिकारियों के लिए प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम	12 सितम्बर से 24 सितम्बर, 1977 तक	8

	अवधि	सहभागियों की संख्या
— राज्य-शिक्षा योजना अधिकारियों के लिए दूसरा प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	16 जनवरी से 25 जनवरी, 1978 तक	19
— राज्य शिक्षा योजना अधिकारियों के लिए तीसरा प्रशिक्षण कार्यक्रम	6 फरवरी से 16 फरवरी, 1978 तक	14
3. संस्थाओं के अध्यक्षों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम ।		
— तमिलनाडु के महाविद्यालयों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 1977 तक	26
— उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए शैक्षणिक संसाधनों में प्रबन्धन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम ।	20 फरवरी से 25 फरवरी, 1978	22
4. विश्वविद्यालयों के वित्त अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम ।		
— भारतीय विश्वविद्यालों के लिए वित्त प्रबन्ध संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम ।	29 अगस्त से 9 सितम्बर, 1977 तक	10
5. राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयकों के लिए प्रशिक्षण ।		
— राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रधान कार्मिकों के लिए तीन अभिविन्यास कार्यक्रम ।	(1) 11 अप्रैल से 14 अप्रैल, 1977 तक	42
	(2) 25 जुलाई से 28 जुलाई, 1977 तक	28
	(3) 22 अगस्त से 25 अगस्त, 1977 तक	35

	अवधि	सहभागियों की संख्या
6. संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम ।		
—संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम ।	5 अप्रैल से 7 अप्रैल, 1977 तक	6
— संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के चुने हुए समूह के लिए दूसरा अभिविन्यास कार्यक्रम ।	20 मार्च से 22 मार्च, 1978 तक	6
— उच्चतर शिक्षा के कुछ पक्षों पर संगोष्ठी ।	4 अगस्त से 6 अगस्त, 1977 तक	6
7. अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम		
— संयुक्त राज्य अमरीका के सामाजिक अध्ययन के अधीक्षकों तथा पाठ्यचर्या निदेशकों के लिए भारतीय इतिहास और संस्कृति में कार्यगोष्ठी ।	21 जून से 14 जुलाई, 1977 तक	19
— अफगानिस्तान सरकार के शैक्षणिक नियोजन विभाग के अध्यक्ष श्री एम० टी० प्रोजोश के लिए कार्यक्रम ।	4 दिसम्बर से 12 दिसम्बर, 1977 तक	1
— बर्मा तथा अफगानिस्तान के शिक्षा अधिकारियों के लिए अध्ययन तथा प्रेक्षण कार्यक्रम ।	2 जनवरी से 14 जनवरी 1978 तक	13

उपरोक्त कार्यक्रमों में 366 व्यक्तियों ने भाग लिया जिनमें शिक्षा योजना अधिकारी, वित्त अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी, केन्द्रीय और राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी, विद्यालय और महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, 21 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों से आए राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रधान कार्मिक तथा विदेशों से आए 33 सहभागी सम्मिलित थे ।

I

प्रशासन, निधि और वित्त

प्रशासन, निधि और वित्त

प्रस्तावना

भारत में शैक्षणिक नियोजन एवं प्रशासन में सुधार लाने और उसे सुदृढ़ बनाने के लिए शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालिज की स्थापना की गई। इस संस्था का पंजीकरण संस्था पंजीकरण अधिनियम (1860 का 21वां अधिनियम) के अंतर्गत एक स्वायत संस्था के रूप में 31 दिसम्बर, 1970 को हुआ।

लक्ष्य और उद्देश्य

स्टाफ कालिज के लक्ष्य और उद्देश्य इस प्रकार हैं :-

(क) केन्द्रीय और राज्य सरकारों के तथा संघ राज्य क्षेत्रों के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के लिए सेवा पूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण, सम्मेलन, कार्य गोष्ठियां, सभाएं, संगोष्ठियां और अल्पावधिक शिक्षण सत्र आयोजित करना;

(ख) शैक्षणिक नियोजन और प्रबंध से संबंधित प्रशिक्षकों और प्रशासकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना;

(ग) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुमोदन से विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के प्रशासकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित करना;

(घ) शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन के विविध पक्षों पर, जिनमें भारत के विभिन्न राज्यों और संसार के अन्य देशों में प्रचलित शैक्षणिक नियोजन प्रविधियों और प्रशासनिक कार्य-प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन भी शामिल हैं, अनुसंधान कार्य करना, इस कार्य में लगे व्यक्तियों और संस्थाओं की सहायता करना, इसे बढ़ावा देना और इसका समन्वय करना;

(ङ) शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन-कार्य में लगी एजेन्सियों, संस्थाओं और कार्मिकों का शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन करना;

(च) राज्य सरकारों और अन्य शिक्षा संस्थाओं की मांग पर उन्हें परामर्श सेवा प्रदान करना;

(छ) शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन सेवाओं और अन्य कार्यक्रमों के क्षेत्र में अनुसंधान, प्रशिक्षण और विस्तार सम्बन्धी विचारों और सूचनाओं के निकास केन्द्र का काम करना;

(ज) इन उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में किए जाने वाले प्रयत्नों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न लेख, आवाधिक पत्रिकाएं और पुस्तकें तैयार करना और उन्हें मुद्रित एवं प्रकाशित करना, और विशेष रूप से शैक्षणिक नियोजन एवं प्रशासन पत्रिका निकालना;

(झ) देश-विदेश के विश्वविद्यालयों, प्रबंध एवं प्रशासन संस्थाओं और अन्य सबंध संस्थाओं सहित अन्य एजेन्सियों, संस्थानों तथा संगठनों के साथ इस प्रकार सहयोग करना जो कि इन उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए जरूरी समझे जाएं;

(ञ) स्टाफ कालिज को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन के तौर पर विभिन्न अध्येतावृतियां प्रदान करना; और

(ट) अन्य देशों विशेषकर एशियाई देशों की मांग पर उन्हें शैक्षणिक नियोजन अनुसंधान की सुविधाएं प्रदान करना और ऐसे कार्यक्रमों में उनके साथ सहयोग करना।

परिषद्

स्टाफ कालिज संबंधी समस्त प्राधिकार एक 23 सदस्यीय परिषद में निहित है। इस का अध्यक्ष केन्द्रीय शिक्षा मंत्री होता है। कालिज का निदेशक परिषद का पदेन सदस्य-सचिव होता है। सितम्बर, 1977 को परिषद का पुनर्गठन किया गया। पुनर्गठित परिषद् के सदस्यों की सूची परिशिष्ट-1 में दी गई है

महत्वपूर्ण मसलों पर विचार करने के लिए समीक्षाधीन अवधि में परिषद् की एक बैठक 10 अगस्त, 1977 को बुलाई गई।

कार्यसमिति

एक 8 सदस्यीय कार्यसमिति, जिसका अध्यक्ष भी केन्द्रीय शिक्षा मंत्री होता है, स्टाफ कालिज का प्रशासन चलाती है। कालिज का निदेशक परिषद् का पदेन सदस्य-सचिव होता है। कार्यसमिति के सदस्यों की सूची परिशिष्ट-II में दी गई हैं।

निधियाँ और वित्त

स्टाफ कालिज का पूरा व्यय केन्द्रीय शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय वहन करता है। समीक्षाधीन अवधि में कालिज को 17,56,815.59 रुपये का अनुदान दिया गया था (जिसमें से 14,65,815.59 रुपए की राशि योजना व्यय और 2,91,000.00 रुपए की राशि योजनेतर व्यय के लिए थी) । इस अवधि में कालिज द्वारा कुल 15,97,717.06 रुपये खर्च किए गए (जिनमें से 13,27,558.63 रुपए योजना कार्यों पर और 2,47,205.30 रुपए योजनेतर कार्यों पर) तथा 22,209.18 रुपए यूनेस्को द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों पर, 743.95 रुपये राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रायोजित तीसरे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण पर खर्च हुए।

1977-78 वर्ष के आय-व्यय की लेखा-परीक्षा 1-7-1978 से 24-7-1978 तक की गई। इस लेखा परीक्षा की रिपोर्ट की एक प्रति परिशिष्ट-III में दी गई है।

छात्रावास

स्टाफ कालिज का अपना ही छात्रावास है। इसमें 48 पूरी तरह सज्जित एकल कमरे हैं जिनमें हर कमरे के साथ एक स्नानगृह भी संलग्न है । स्टाफ कालिज द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम मुख्यतया आवासीय होते है।

कालिज का कर्मचारी-वर्ग

31 मार्च, 1978 को संकाय की सूची परिशिष्ट-IV में और इस अवधि में इसके सदस्यों में हुए परिवर्तनों की सूची परिशिष्ट-V में दी गई है।

II

कार्यक्रमों और क्रियाकलापों की समीक्षा

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों के लिए क्षेत्रीय शैक्षणिक नियोजन संबंधी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

(भीमताल : 5 मई से 14 मई, 1977 तक)

उत्तर प्रदेश राज्य सरकार के शिक्षा निदेशालय के अनुरोध पर और उसी के सहयोग से स्टॉफ कालिज ने उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के लिए भीमताल में 5 मई से 14 मई, 1977 तक क्षेत्रीय शैक्षणिक नियोजन संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

उद्देश्य :

पर्वतीय क्षेत्रों में विकास कार्यक्रमों और शिक्षा में प्रभावी सम्पर्क खोजने और स्थापित करने तथा इस प्रकार अपनी पहचान खोए बिना शिक्षा को विकास का प्रभावी साधन माने जाने के लिए शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश सरकार के परामर्श से प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तैयार किया गया। इस पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्न थे :

(क) क्षेत्रीय विकास की संकल्पना तथा इसके प्रसार में शिक्षा की भूमिका निर्वाह पर विचार विमर्श;

(ख) +2 अवस्था पर शिक्षा के व्यावसायीकरण के प्रश्न पर तथा +2 अवस्था पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की पहचान के लिए वर्तमान स्थिति तथा उभरते हुए व्यवसायों का सर्वेक्षण करने के लिए बनाए गए प्रपत्र पर विचार-विमर्श करना;

(ग) पर्वतीय क्षेत्रों के विकास के अनुकूल अनौपचारिक शिक्षा पद्धति का निर्माण करना तथा उस पर विचार-विमर्श;

(घ) पर्वतीय क्षेत्रों में शैक्षणिक पद्धति की सामान्य कुशलता में वृद्धि; तथा

(ङ) छठी योजना के अंत में प्राप्त प्रगति का मूल्यांकन तथा छठी योजना की संभावित सफलता को संकेतित करना।

सहभागी

इस कार्यक्रम में शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश तथा संबंधित जिला क्षेत्रों के 25 वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया।

पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

कार्यक्रम के मुख्य विचारणीय विषय निम्न थे :

(1) पर्वतीय जिलों के शैक्षणिक विकास के लिए उपयुक्त विषयों पर व्याख्यान तथा परिचर्चा,

(2) पैनल परिचर्चा, तथा

(3) व्यावहारिक अभ्यास ।

मुख्य विषय

व्याख्यान-परिचर्चाओं के निम्न विषय थे :

- क्षेत्रीय योजना की संकल्पना तथा नीति ।
- उत्तर प्रदेश राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों के विकास के संदर्भ
- व्यावसायिक सर्वेक्षण : व्यावसायिक सर्वेक्षण के मुख्य उद्देश्य तथा तकनीक तथा इसके लिए प्रपत्र का प्रचालन ।
- पर्वतीय क्षेत्रों के विकास के लिए शिक्षा : पश्चावलोकन तथा प्रत्याशा ।
- छठी योजना की प्रत्याशा : एक दृष्टिकोण ।
- 10+2+3 शिक्षा प्रतिमान तथा पर्वतीय क्षेत्रों के विकास में इसका अनुपयोग ।
- भीमताल ब्लाक का क्षेत्रीय विकास ।
- पर्वतीय क्षेत्रों के विकास के लिए अनौपचारिक शिक्षा की भूमिका ।
- पर्वतीय क्षेत्रों के आवासीय परिवेश और विकास के लिए शिक्षा ।

पैनल परिचर्चा

इसके अतिरिक्त दो पैनल परिचर्चायें भी आयोजित की गई :

(I) पर्बतीय क्षेत्रों में +2 अवस्था में व्यावसायीकरण ।

(II) पर्वतीय क्षेत्रों के व्यावसायिक सर्वेक्षण के लिए बनाए गए प्रपत्र पर विचार-विमर्श ।

व्यवहारिक अभ्यास

उद्दीपन तथा भूमिका निर्वाह तकनीक पर आधारित व्यावहारिक अभ्यास पाठयक्रम की मुख्य विषयवस्तु थी । वस्तुतः इसे पाठ्यक्रम का मूल समझा गया था। इसमें औपचारिक शिक्षा पद्धति, अनौपचारिक शिक्षा पद्धति तथा अन्य विकासशील विभागों की आधारिक संरचना का

तथा स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं को जानने तथा उत्तर प्रदेश राज्य के पर्वतीय ज़िलों के सम्पूर्ण विकास के संदर्भ में शैक्षिक विकास की योजना की रूपरेखा तैयार करने के लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण निहित था। 10 दिन की कुल अवधि में से 6 दिन व्यावहारिक अभ्यास में व्यतीत किये गए। अभ्यास का मुख्य उद्देश्य था—**नैनीताल के पर्वतीय ज़िलों के भीमताल खंड के समस्त समेकित विकास के संदर्भ में शैक्षिक विकास की योजना की रूपरेखा तैयार करना।**

शैक्षिक नियोजन प्रयोगशाला :

भीमताल खंड ने व्यावहारिक अभ्यास के लिए शैक्षिक नियोजन की प्रयोगशाला का कार्य किया। भाग लेने वालों को पृष्ठभूमि-प्रलेख के रूप में सब संबद्ध शैक्षिक सामग्री दे दी गई। इसके अतिरिक्त भाग लेने वालों ने निम्न सर्वेक्षण किया :

(I) **औपचारिक शिक्षा पद्धति** जिसमें विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा संस्थाओं के अध्यक्षों के साथ साक्षात्कार सम्मिलित थे (7-5-77)।

(II) **सामुदायिक समस्यायें तथा अनौपचारिक शिक्षा पद्धति** इसमें समुदाय के कुछ मुख्य सदस्यों से साक्षात्कार सम्मिलित थे (8-5-77)।

(III) जिला/ब्लाक स्तर पर विकासशील विभागों के प्रतिनिधियों के साथ साक्षात्कार सम्मिलित थे (9-5-77)।

समय और दूरी के कारण केवल 12 विद्यालयों, 9 समुदायों, तथा 3 अनौपचारिक शिक्षा परियोजनाओं का ही अध्ययन किया गया।

उद्दीपन तथा भूमिका निर्वाह

व्यावहारिक अभ्यास में मुख्यत: उद्दीपन और भूमिका निर्वाह की पद्धति ही अपनायी गई। अभ्यास के लिए सब भाग लेने वालों को दो दलों में विभाजित किया गया : दल क और ख। प्रत्येक दल को स्वयं ही अपना नेता और उप-नेता चुनना था। दोनों दलों के अध्ययन के मुख्य विषय निम्न थे। प्राथमिक शिक्षा, मिडिल शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, लड़कियों की शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, व्यावसायीकरण, शिक्षा का गुणात्मक संवर्धन, अध्यापक प्रशिक्षण, भवन तथा उपकरण और समुदाय की प्रतिक्रियायें आदि।

संकाय और भाग लेने वालों द्वारा 14 मई, 1977 की दोनों दलों द्वारा तैयार की गई रिपोर्टों पर विचार विमर्श किया गया और उसका मूल्यांकन भी किया गया।

व्यावसायिक सर्वेक्षण

क्षेत्र वीक्षण के दौरान भाग लेने वालों को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए व्यावसायिक सर्वेक्षण के लिए दो प्रपत्र प्रचालित करने के लिए भी कहा गया :-

(1) स्वनियोजन के लिए उभरते हुए व्यवसायों और व्यावसायिक क्षेत्रों का सर्वेक्षण, तथा

(2) प्रचलित नान फार्म स्थापनाओं का सर्वेक्षण ।

उद्घाटन और समापन

इस कार्यक्रम का उद्घाटन राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के निदेशक, प्रो० एम० वी० माथुर ने 5 मई, 1977 को किया तथा समापन समारोह रुड़की विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा० जी० पांडे ने 14 मई, 1977 को अपने समापन भाषण से किया ।

तमिलनाडु के शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम

- (नई दिल्ली : 23 मई से 28 मई, 1977 तक)

तमिलनाडु सरकार के विद्यालय शिक्षा निदेशक के अनुरोध पर तथा उसी के सहयोग से स्टाफ कालिज ने नई दिल्ली में 23 मई से 28 मई, 1977 तक राज्य के शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन सम्बंधी एक सप्ताह का अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया ।

उद्देश्य

यह अभिविन्यास कार्यक्रम तामिलनाडु सरकार के विद्यालय-शिक्षा निदेशालय के परामर्श से राज्य के शिक्षाअधिकारियों की व्यावसायिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाया गया था । इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्न थे :-

(क) सहभागियों को तमिलनाडु राज्य के विशेष संदर्भ में शैक्षिणिक नियोजन तथा प्रशासन की कुछ संकल्पनाओं और समस्याओं से परिचित कराना,

(ख) सहभागियों को प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण, कार्य अनुभव तथा अनौपचारिक शिक्षा के विशेष संदर्भ में पांचवीं योजना में सम्मिलित शिक्षा सुधार के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों तथा कार्यों से परिचित कराना, तथा

(ग) शैक्षिक अधीक्षकों के रुप में अपनी प्रभाविता में सुधार करने योग्य बनाना ।

सहभागी

कार्यक्रम में 16 शिक्षा अधिकारयों ने भाग लिया ।

पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

भाग लेने वालों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तामिलनाडु के विद्यालय शिक्षा निदेशक के परामर्श से इस पाठ्यक्रम को सावधानी से तैयार किया गया । सामान्य व्याख्यान परिचर्चाओं के अतिरिक्त निम्नलिखित विषयों पर दो पैनल-परिचर्चायें की गई :-

(i) अनौपचारिक शिक्षा : संकल्पना और पद्धतियाँ, तथा

(ii) विद्यालयों का निरीक्षण और पर्यवेक्षण ।

परिचर्चाओं के अन्य विषय निम्न थे :

- भारत में शैक्षणिक नियोजन ;
- पांचवीं पंचवर्षीय योजना के विशेष संदर्भ में तमिलनाडु में शैक्षिक विकास की समीक्षा ;
- प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकीकरण ;
- विद्यालयों में अपव्यय तथा गतिरोध ;
- अनौपचारिक शिक्षा : संकल्पना तथा पद्धतियाँ ;
- कार्यअनुभव : संकल्पना तथा क्रियाकलाप ;
- शैक्षणिक नियोजन में मूल संकल्पनायें तथा तकनीक ;
- ज़िला स्तर पर शैक्षणिक नियोजन ;
- योजना-कार्यन्वयन के विशेष संदर्भ में ज़िला स्तर पर शिक्षा प्रशासन की समस्यायें;
- अध्यापकों की सेवा कालीन शिक्षा : राज्य के ज़िला शिक्षा अधिकारियों की भूमिका ;
- ग्राम विकास के लिए शिक्षा ;
- शिक्षा में गुणवत्ता नियोजन ;
- समुदाय के कमज़ोर वर्गों के बच्चों के लिए शिक्षा से सम्बंधित विशेष कार्यक्रम ;
- शिक्षा सम्बंधी प्रसारण के विशेष संदर्भ में शिक्षा के संवर्धन के लिए जनसंपर्क माध्यमों का प्रयोग (आकाशवाणी) तथा,
- विद्यालयों का निरीक्षण तथा पर्यवेक्षण ।

क्षेत्र-वीक्षण

भाग लेने वालों ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् के कार्य और क्रियाओं का व्यक्तिगत रुप से अध्ययन करने के लिए क्षेत्र-वीक्षण किया ।

उद्घाटन तथा समापन

इस कार्यक्रम का उद्घाटन 23 मई, 1977 को भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार श्री कीर्ति जोशी द्वारा किया गया तथा भारत सरकार के भूतपूर्व शिक्षा-सचिव तथा युनेस्को कार्यकारी बोर्ड के अध्यक्ष डा० प्रेम किरपाल ने 28 मई, 1977 को समापन भाषण दिया ।

सिक्किम के विद्यालय प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम

(गंगटोक : 2 जून से 14 जून, 1977 तक)

सिक्किम सरकार के शिक्षा निदेशालय के अनुरोध पर तथा उन्हीं के सहयोग से स्टाफ कालिज ने 2 जून से 14 जून, 1977 तक गंगटोक में सिक्किम के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए दो सप्ताह का शैक्षणिक नियोजन तथा प्रसासन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया।

उद्देश्य

यह अभिविन्यास कार्यक्रम सिक्किम सरकार के शिक्षा निदेशक के परामर्श से राज्य के विद्यालय प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों की व्यावसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाया गया था। इस कार्यक्रम के मुख्य उदेश्य निम्न थे :-

(क) सहभागियों को सिक्किम राज्य के विशेष संदर्भ में शैक्षणिक नियोजन, प्रशासन तथा पर्यवेक्षण की कुछ महत्वपूर्ण संकल्पनाओं और समस्याओं से परिचित कराना ;

(ख) शिक्षा सम्बन्धी पांचवीं पंचवर्षीय योजना में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण कार्य अनुभव तथा अनौपचारिक शिक्षा के संदर्भ में शैक्षिक सुधार के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों तथा क्रियाओं से उन्हें अवगत कराना ; तथा

(ग) शैक्षिक अधीक्षकों के रूप में अपनी प्रभाविता में सुधार करने योग्य बनाना।

सहभागी

कार्यक्रम में सिक्किम के 25 विद्यालय-प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया।

मुख्य विषय

निम्नलिखित विषयों पर विचार-विमर्श हुआ :

- भारत में स्वातंत्र्योतर शैक्षिक विकास की समीक्षा ;
- सिक्किम में शैक्षिक विकास : पश्चावलोकन तथा प्रत्याशा ;

- शिक्षा में गुणवत्ता नियोजन ;
- प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकीकरण ;
- अनौपचारिक शिक्षा : संकल्पना तथा पद्धतियाँ ;
- विद्यालय में अपव्यय और गतिरोध ;
- विद्यालय-समुदाय सम्बंध ;
- कार्य अनुभव : संकल्पना तथा क्रियाकलाप ;
- भारत में शैक्षणिक नियोजन - एक विहंगम दृष्टि ;
- शैक्षणिक नियोजन में मूल संकल्पनायें तथा तकनीक ;
- शैक्षणिक नियोजन के लिए आवश्यक सामग्री ;
- शैक्षणिक सांख्यिकी को एकत्रित करने के लिए वर्तमान प्रपत्रों की समीक्षा ;
- खंड/जिला स्तर पर शैक्षणिक नियोजन ;
- संस्थागत योजना ;
- ब्लाक/जिला स्तर पर कार्यान्वयन को नियोजित करने के विशेष संदर्भ में शैक्षणिक प्रशासन की समस्याएँ ;
- जनसंख्या नियंत्रण शिक्षा ;
- विज्ञान शिक्षा,
- सिक्किम सरकार के सेवा नियम ;
- पाठ्यक्रम नवीकरण तथा शिक्षण की नई तकनीक ;
- परीक्षा सुधार ;
- सिक्किम के वित्तीय नियम ;
- विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा ;
- लड़कियों तथा समुदाय के कमज़ोर वर्ग की शिक्षा के लिए विशेष कार्यक्रम ;
- विद्यालय प्रधानाचार्यों की सुपरवाईज़री भूमिका ;
- अध्यापकों का सेवा कालीन प्रशिक्षण-विद्यालय के प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों की भूमिका ;
- बजट में सुधार तथा वित्तीय प्रबंध ;
- स्टाफ की बैठकों को विद्यालय संवर्धन का प्रभावी साधन बनाना ;
- ग्राम-विकास के लिए शिक्षा ; तथा
- विद्यालयों का निरीक्षण तथा पर्यवेक्षण ।

क्षेत्र-वीक्षण तथा व्यावहारिक अभ्यास

भाग लेने वालों ने दो चुने हुए क्षेत्रों, रमटेक तथा देयोरली में समुदाय की अनौपचारिक शिक्षा की आवश्यकताओं को जानने के लिए आयोजित किए गए अभिविन्यास कार्यक्रम के एक भाग के रूप में 5 जून, 1977 को एक सर्वेक्षण किया।

सर्वेक्षण की खोजों पर 11 जून 1977 को एक विशेष सभा में विचार विमर्श किया गया। एक काल्पनिक देश 'हिमलैंड' की शैक्षिक योजना तैयार करने के लिए 11 जून, 1977 को आयोजित की गई एक विशेष सभा में भाग लेने वालों के प्रशिक्षण के लिए उद्दीपन तकनीक का प्रयोग किया गया।

पुस्तक प्रदर्शनी

अभिविन्यास कार्यक्रम की अवधि के दौरान भाग लेने वालों के लाभ के लिए 5 जून से 12 जून, 1977 तक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन 5 जून, 1977 के अपराह्न में तीन बजे गंगटोक के वेस्ट पाइंट स्कूल में सिक्किम के मुख्यमंत्री श्री काजीलेंहडप दोरजी ने किया।

उद्घाटन और समापन

कार्यक्रम का उद्घाटन 2 जून, 1977 को सिक्किम के मुख्य मंत्री श्री काजी लेंहडप दोरजी ने किया तथा शिक्षा और संस्कृति मंत्री श्री नायन त्रिशिंग लेप्चा ने 14 जून, 1977 को समापन भाषण दिया।

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा के परिवीक्षाधीन प्रशिक्षणार्थी के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

(नई दिल्ली : 3 अगस्त से 16 अगस्त, 1977 तक)

राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने 3 अगस्त से 16 अगस्त, 1977 तक उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा के परिवीक्षाधीन प्रशिक्षणार्थी श्री संजय मोहन के लिए दो सप्ताह का शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :-

- प्रशिक्षणार्थी को शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन की महत्वपूर्ण मूल संकल्पनाओं से परिचित कराना,

- उसे शिक्षा की नयी प्रवृत्तियों तथा सुधारों से अवगत कराना, तथा

- विद्यालयों के ज़िला-निरीक्षक के कर्त्तव्यों का कुशलता तथा प्रभावकारी रूप से निभाने में उसकी सहायता करना।

सामान्य रूप से विविध राज्यों और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में शैक्षणिक प्रशासन के सर्वेक्षण पर, विविध स्तरों पर योजना पर, शैक्षणिक नियोजन की तकनीकों, ज़िला शिक्षा अधिकारियों की भूमिका तथा कार्यों पर, तथा विज्ञान-शिक्षा और ग्राम शिक्षा आदि पर विचार-विमर्श करने के लिए श्री संजय मोहन के लिए विशेष कार्यक्रम बनाया गया। उन्हें राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र, योजना-आयोग, दिल्ली प्रशासन के शिक्षा निदेशालय और शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय का वीक्षण करने और उनके संगठनों पर चर्चा करने के अवसर भी दिए गए। उन्होंने कुछ समय राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के पुस्तकालय में नियंत्रित अध्ययन पर भी व्यतीत किया। राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के संकाय तथा निदेशक से भी उन्होंने कई बैठकें कीं तथा कार्यक्रम के अंत में अपनी रिपोर्ट तथा मूल्यांकन प्रस्तुत किया।

मध्य प्रदेश के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम

(भोपाल : 3 अक्तूबर से 13 अक्तूबर, 1977 तक)

मध्य प्रदेश सरकार के जन शिक्षा निदेशालय के अनुरोध पर तथा उन्हीं के सहयोग से राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने 3 अक्तूबर से 13 अक्तूबर, 1977 तक भोपाल के राज्य शिक्षा संस्थान में मध्य प्रदेश के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के लिए दो सप्ताह का शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया ।

उद्देश्य :

कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :-

(क) भाग लेने वालों को शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी कुछ संकल्पनाओं, तकनीकों तथा समस्याओं से परिचित करवाना ;

(ख) उन्हें शिक्षा की नई प्रवृत्तियों तथा गुणात्मक-सुधार कार्यक्रमों से अवगत करवाना; तथा

(ग) शिक्षा अधीक्षकों के रूप में उन्हें तकनीकी कुशलता तथा प्रभावशीलता में उन्नति करने के योग्य बनाना ।

सहभागी

मध्य प्रदेश सरकार के जन शिक्षा निदेशालय के 20 अधिकारियों के समूह ने इस कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें 6 शिक्षा मंडल अधीक्षक, जन शिक्षा निदेशालय के एक उप-निदेशक तथा शिक्षा महाविद्यालयों एवं राज्य शिक्षा संस्थान के 13 प्रधानाचार्य और आचार्य सम्मिलित थे ।

पाठ्यक्रम निर्माण

यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश सरकार जन शिक्षा निदेशालय के परामर्श से राज्य के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के व्यावसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाया गया था ।

सामान्य व्याख्यान-परिचर्चाओं के अतिरिक्त पांच पैनल-परिचर्चायें भी आयोजित की गई :

(1) मध्य प्रदेश में एम० एड् स्तर पर शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन का शिक्षण;

(2) अनौपचारिक शिक्षा : संकल्पना और विधियाँ;

(3) निरीक्षण और पर्यवेक्षण;

(4) मध्य प्रदेश में शिक्षा-प्रबंधन में सुधार;

(5) राज्य में प्रारंभिक शिक्षा के प्रबंध का विकेन्द्रीकरण ।

विषय :

कार्यक्रम के मुख्य विषय निम्नलिखित थे :-

(1) भारत में स्वतन्त्रता के पश्चात् शैक्षिक विकास की समीक्षा;

(2) मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय नीति आंदोलन के संदर्भ में शैक्षिक विकास;

(3) प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकीकरण;

(4) भारत में शैक्षणिक नियोजन : कुछ झलकियां;

(5) पाठ्यक्रम नवीकरण तथा शिक्षण की नई तकनीकें;

(6) शिक्षा का नया प्रतिमान : उसका दर्शन तथा कार्यान्वयन की समस्यायें;

(7) शैक्षणिक नियोजन की मूल संकल्पनायें तथा तकनीक;

(8) विधि तथा विभागीय पूछताछ से संबंधित मसले;

(9) मध्य प्रदेश में एम० एड्० के स्तर पर शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी शिक्षा;

(10) शिक्षा में नवाचार और प्रयोग : शिक्षा अधिकारियों की भूमिका;

(11) छात्रवृत्तियां तथा प्रतिभा खोज;

(12) ब्लाक/जिला स्तर पर शैक्षणिक नियोजन;

(13) सेवा नियम (आधारभूत नियम, सरकारी सेवा आचरण नियम तथा अवकाश नियम);

(14) विज्ञान शिक्षा में सुधार;

(15) संस्थागत योजना;

(16) अनौपचारिक शिक्षा : उसकी संकल्पना तथा पद्धतियां;

(17) मध्य प्रदेश में शैक्षणिक प्रबंध का आधुनिकीकरण;

(18) विद्यालय भवन;

(19) अध्यापकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण : शिक्षा अधिकारियों की भूमिका;

(20) विद्यालयों का निरीक्षण एवं सर्वेक्षण;

(21) बजट संबंधी सुधार तथा वित्तीय प्रबंध;

(22) ग्राम विकास के लिए शिक्षा;

(23) कार्य अनुभव : उसकी संकल्पना तथा क्रियाकलाप;

(24) आधुनिक प्रबंधन तकनीक तथा शैक्षिक प्रबंधत में उनका अनुप्रयोग : पद्धतियां उपागम तथा कार्यक्रम मूल्यांकन एवं पुर्नावलोकन तकनीक;

(25) मध्य प्रदेश में प्रारंभिक शिक्षा के प्रबंध का विकेन्द्रीकरण;

(26) मध्य प्रदेश के वित्तीय नियम (विवरणों तथा लेखा परीक्षा सहित);

(27) कार्मिक प्रबंधन; और

(28) समुदाय की लड़कियों तथा पिछड़े हुए वर्गों के लिए विशेष कार्यक्रम (विशेष रूप से मध्य प्रदेश के आदिवासी वच्चों के संदर्भ में)।

उद्घाटन और समापन

कार्यक्रम का उद्घाटन 3 अक्तूबर, 1977 को मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री हरिभाऊ जोशी ने किया। इसका समापन 13 अक्तूबर, 1977 को हुआ जबकि मध्य प्रदेश के राज्य शिक्षा मंत्री श्री ओ० पी० रावल ने समापन भाषण दिया।

अंडमान और निकोबार द्वीपों के विद्यालय प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम

(पोर्ट ब्लेयर : 26 अक्तूबर से 7 नवम्बर, 1977 तक)

प्रस्तावना

शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने अंडमान तथा निकोबार द्वीपों के शिक्षा निदेशालय के अनुरोध पर और उन्हीं के सहयोग से 26 अक्तूबर से 7 नवम्बर, 1977 तक उक्त द्वीपों के विद्यालय-प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी दो सप्ताह के एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम के उद्देश्य

यह अभिविन्यास कार्यक्रम अंडमान तथा निकोबार द्वीपों के शिक्षा निदेशालय के परामर्श से संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन के स्कूल प्राधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों की व्यावसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाया गया था। इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्न थे :

(क) सहभागियों को शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन की कुछ महत्वपूर्ण संकल्पनाओं, तकनीकों और समस्याओं से परिचित कराना;

(ख) गुणात्मक सुधार की नई शैक्षिक प्रवृत्तियों और कार्यक्रमों से अवगत कराना; तथा

(ग) शैक्षिक अधीक्षकों के रूप में उन्हें अपनी तकनीकी दक्षता और प्रभाविता में सुधार करने में सहायता करना।

सहभागी

कार्यक्रम में अंडमान तथा निकोबार द्वीपों के शिक्षा विभाग के 28 अधिकारियों के एक समूह ने जिनमें उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य तथा शिक्षा अधिकारी सम्मिलित थे, भाग लिया।

पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

यह कार्यक्रम अंडमान तथा निकोबार द्वीपों के संघ राज्य क्षेत्र के उन शिक्षा अधिकारियों के परामर्श से जिन्हें प्रशासन की शैक्षिक समस्याओं का अन्तरंग ज्ञान था, तमिलनाडु सरकार

के विद्यालय शिक्षा निदेशक के परामर्श से तथा केन्द्रीय भवन निर्माण अनुसंधान संस्थान, रुड़की के एक संकाय सदस्य के परामर्श से बनाया गया था ।

कार्यक्रम के विषय निम्नलिखित थे :

- प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकीकरण;
- शिक्षा के नए प्रतिमान;
- कार्य अनुभव : संकल्पना तथा क्रियाकलाप;
- माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण;
- शिक्षा में गुणात्मक सुधार;
- विद्यालयों में विज्ञान और गणित के शिक्षण में सुधार;
- ज़िला स्तर पर शैक्षणिक नियोजन;
- शैक्षणिक नियोजन के लिए आवश्यक मूल सामग्री;
- अपव्यय तथा गतिरोध :
- अंडमान तथा निकोबार द्वीपों के विशेष संदर्भ में विद्यालय भवन निर्माण;
- संस्थागत योजना;
- परीक्षा सुधार;
- अध्यापकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण;
- निरीक्षण तथा पर्यवेक्षण;
- बहु-माध्यम विद्यालयों की समस्यायें;
- पाठ्यपुस्तकों के उत्पादन और वितरण की समस्याऐं;
- विद्यालयों में पारी (शिफ्ट) पद्धति का प्रारंभ;
- अंडमान तथा निकोबार द्वीपों के आदिवासी क्षेत्र के बच्चों के विशेष संदर्भ में समुदाय के कमज़ोर वर्गों तथा लड़कियों की शिक्षा के विशेष कार्यक्रम;
- अनौपचारिक शिक्षा : संकल्पना और पद्धतियां;
- सेवाकालीन नियम;
- वित्तीय नियम; तथा
- अंडमान तथा निकोबार द्वीपों में शिक्षा और शैक्षणिक प्रबंध में आधुनिकीकरण ।

उपरोक्त विषयों पर व्याख्यान - परिचर्चाओं के अतिरिक्त पैनल परिचर्चायें भी आयोजित की गई थीं।

उद्घाटन तथा समापन

कार्यक्रम का उदघाटन अंडमान तथा निकोबार द्वीपों के मुख्य आयुक्त द्वारा 26 अक्तूबर 1977 को किया गया। अंडमान तथा निकोबार द्वीपों के सैन्यदुर्ग कमान्डर एच० एम० एल० सक्सेना ने 7 नवम्बर, 1977 को समापन भाषण दिया।

अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम

(चंगलांग, 15 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 1977 तक)

प्रस्तावना

शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने अरुणाचल प्रदेश के जन शिक्षा निदेशालय के अनुरोध पर तथा उसी के सहयोग से 15 दिसम्बर से 24 दिसम्बर, 1977 तक बी० एस० बी० चंगलांग में अरुणाचल प्रदेश के विद्यालय प्रधानाचार्यों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए दो सप्ताह का शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन से सबधित अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम के उद्देश्य :

यह कार्यक्रम अरुणाचल के जन शिक्षा निदेशालय के परामर्श मे संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन के शिक्षा अधिकारियों तथा विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की व्यावसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाया गया था। कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :-

(क) सहभागियों को शैक्षिक नियोजन तथा प्रशासन की मुख्य संकल्पनाओं तथा तकनीकों से परिचित कराना ;

(ख) शिक्षा की नयी शैक्षिक प्रवृत्तियों तथा गुणात्मक सुधार कार्यक्रमों से परिचित कराना ;

(ग) शैक्षिक अधीक्षकों के रुप मे उन्हें अपनी प्रभाविता में संवर्धन करने योग्य बनना।

सहभागी

इस कार्यक्रम में अरुणाचल प्रदेश के 29 अधिकारियों ने भाग लिया जिसमें माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 18 प्रधानाचार्य तथा ज़िला शिक्षा अधिकारी की श्रेणी के 11 शिक्षा अधिकारी सम्मिलित थे।

मुख्य विषय

कार्यक्रम में निम्नलिखित विषयों पर विचार किया गया :

- शिक्षा के नए प्रतिमान ; उसका दर्शन तथा उसके कार्यान्वयन की समस्यायें ;
- अनौपचारिक शिक्षा : संकल्पना तथा पद्धतियाँ ;
- प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकीकरण ;
- कार्य अनुभव : संकल्पना तथा क्रियाकलाप ;
- भारत में शैक्षणिक नियोजन - एक दृष्टि ;
- शैक्षिक नियोजन में मूल संकल्पनायें तथा तकनीक ;
- ब्लाक/ज़िला स्तर पर शैक्षणिक नियोजन ;
- शैक्षणिक नियोजन के लिए आवश्यक मूलसामग्री ;
- लड़कियों के लिए शिक्षा ;
- संस्थागत योजना ;
- उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण ;
- विद्यालय स्तर पर विज्ञान शिक्षा में सुधार ;
- परीक्षा सुधार ;
- विद्यालय भवन निर्माण ;
- विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की पर्यवेक्षण संबंधी भूमिका ;
- अध्यापकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण-शिक्षा अधिकारियों तथा विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की भूमिका ;
- कार्मिक प्रबंधन ;
- आधुनिक प्रबंधन तकनीक तथा शैक्षिक प्रशासन में उनका अनुप्रयोग ;
- अपव्यय तथा गतिरोध ;
- प्रौढ़ शिक्षा ;
- निरीक्षण तथा पर्यवेक्षण ;
- ग्राम-विकास के लिए शिक्षा ; तथा
- अरुणाचल प्रदेश में शैक्षिक प्रशासन का आधुनिकीकरण ।

पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

सामान्य व्याख्यात्मक चर्चाओं के अलावा उपरोक्त विषयों पर नाभिकाओं में भी विचार किया गया। सहभागियों ने चंगलांग ग्राम के वयस्कों तथा विद्यालय छोड़ जाने वाले बच्चों की अनौपचारिक शिक्षा की आवश्यकताओं को जानने के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम के भाग के रूप में एक क्षेत्र-सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण का संचालन अनौपचारिक शिक्षा सर्वेक्षण प्रपत्र समिति द्वारा बनाए गए प्रपत्र के आधार पर किया गया। क्षेत्र से संबंधित अनुभव इस उद्देश्य से दिया गया था कि भाग लेने वाले इसी प्रकार के सर्वेक्षण अपनी नियुक्ति के स्थान पर भी संचालित कर सकें और इन तीन लक्ष्य समूहों की अनौपचारिक शिक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उचित पाठ्यचर्या का निर्माण कर सकें। 22-12-77 को आयोजित एक विशेष सत्र में इस सर्वेक्षण की खोजों पर विचार विमर्श किया गया।

उद्घाटन और समापन

इस कार्यक्रम का उद्घाटन 16 दिसम्बर, 1977 को अरुणाचल प्रदेश के उपराज्यपाल श्री के० ए० ए० राजा द्वारा किया गया तथा राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के निदेशक प्रो० एम० वी० माथुर ने 24 दिसम्बर, 1977 को समापन समारोह की अध्यक्षता की।

राज्य शिक्षा योजना अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

(नई दिल्ली : 12 सितम्बर से 24 सितम्बर, 1977 तक, 16 जनवरी से 25 जनवरी 1978 तक तथा 6 फरवरी से 16 फरवरी, 1978 तक)

शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय योजना आयोग के शिक्षा विभाग के अनुरोध पर तथा उन्हीं के सहयोग से राष्ट्रीय स्टॉफ कालिज ने राज्य शिक्षा योजना अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक क्रमशृंखला का आयोजन किया। समीक्षाधीन वर्ष की अवधि में तीन कार्यक्रम आयोजित किए गए : पहला 12 सितम्बर से 24 सितम्बर, 1977 तक, दूसरा 16 जनवरी से 25 जनवरी, 1978 तक तथा तीसरा 6 फरवरी से 16 फरवरी, 1978 तक।

उद्देश्य

इस कार्यक्रम का आयोजन इस उद्देश्य से किया गया था कि राज्य शिक्षा योजना अधिकारी शिक्षा की अगली पंचवर्षीय योजना के कार्य को भली भांति रूप से पूरा करने को अपनी तकनीकी दक्षता में सुधार कर सकें।

सहभागी

प्रत्येक राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र शासन से ऐसे चार से पाँच वरिष्ठ अधिकारियों के दलों को आमंत्रित किया गया था जो (1) विद्यालय तथा प्रौढ़ शिक्षा, (2) उच्च शिक्षा, (3) तकनीकी शिक्षा, तथा (4) सचिवालय स्तर पर शैक्षणिक नियोजन से संबधित योजना पर कार्य कर रहे थे। राज्य/संघ राज्य क्षेत्र शासन से एक अधिकारी के स्थान पर अधिकारियों के दल बुलाने का मुख्य उद्देश्य यह था कि राज्य में शिक्षा के विविध क्षेत्रों से संबंधित अधिकारी एक समेकित योजना तैयार करने के लिए एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करें॥ अभी तक तीन कार्यक्रमों में 41 अधिकारियों ने भाग लिया है।

मुख्य विषय

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत सरकार के शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय तथा योजना आयोग के शिक्षा विभाग से विस्तृत विचार-विमर्श करके बनाया गया था। इसमें निम्नलिखित विषय सम्मिलित किए गए :-

- रोलिंग प्लान (rolling plan) की संकल्पना।
- ब्लाक/जिला स्तर पर शैक्षणिक नियोजन।

- समाज के कमज़ोर वर्गों के लिए शैक्षणिक कार्यक्रम।

- शैक्षिक नियोजन का अधीक्षण, मूल्यांकन तथा प्रतिपुष्टि।

पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि यह पाठ्यक्रम सहभागियों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सावधानी से बनाया गया था। सामान्य व्याख्यामूलक परिचर्चाओं के अलावा 6 से 14 वर्ष के बच्चों तथा 15 से 35 वर्ष के युवकों की प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण, प्रौढ़ साक्षरता तथा अनौपचारिक शिक्षा के विशेष संदर्भ में 'जनसामान्य के लिए शिक्षा" पर नामिकाओं में भी विचार-विमर्श किया गया।

क्षेत्र-वीक्षण

इसके अतिरिक्त भाग लेने वालों ने निम्नलिखित संस्थाओं में उनके काम और क्रियाओं का व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करने के लिए क्षेत्र-वीणण किया :

- शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र, नई दिल्ली।

- अनुप्रयुक्त मानवशक्ति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली।

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।

- योजना आयोग, नई दिल्ली।

- शिक्षा, समाज कल्याण तथा संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली।

व्यवहारिक अभ्यास

कार्यक्रम के दूसरे दौर में, जिसका संबंध व्यावहारिक अभ्यास से था, सहभागियों से विभिन्न क्षेत्रों में अपनी राज्य की योजना का शून्य प्रारूप तैयार करने तथा अंतर्क्षेत्रीय संपर्कों की आवश्यकताओं को ढूँढ निकालने के लिए कहा गया। इसमें अन्य कार्यों के साथ निम्नलिखित कार्य भी सम्मिलित थे :

(1) पाचवीं योजना के अंत में संभावित स्थिति का अनुमान ;

(2) छठी योजना की प्राथमिकताओं तथा लक्ष्यों के लिए नीतियां और कार्यक्रम;

(3) कार्यक्रमों के वित्तीय, भौतिक तथा मानव-शक्ति निहितार्थ, तथा

(4) अंतर्क्षेत्रीय संपर्क।

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No. D-9358
Date 5-12-96

राज्य के दलों द्वारा बनायी गयी योजना के प्रारूप को प्रारंभिक सत्र में प्रस्तुत किया गया।

मार्गदर्शन

समापन से पहले भाग लेने वालों ने अपने अनुभवों के आधार पर शिक्षा की अगली पंचवर्षीय योजना तैयार करने के लिए मार्गदर्शी सिद्धान्त बनाये। प्रत्येक अनुवर्ती कार्यक्रम में इन सिद्धान्तों की सावधानी से समीक्षा की गई।

तमिलनाडु के महाविद्यालय के प्रधानाचार्यों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

(मद्रास : 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 1977 तक)

उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में संबद्ध महाविद्यालयों में पायी जाने वाली नामांकन की उच्च दर-स्नातक स्तर पर 89.4 प्रतिशत तथा स्नातकोत्तर स्तर पर 52.7 प्रतिशत—के तथ्य को विशेष रूप से ध्यान में रखते हुए महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षिक स्तर में वृद्धि करने और उसे बनाए रखने के उद्देश्य से 1976 से 1977 की अवधि के दौरान राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने अभिविन्यास कार्यक्रमों की एक शृंखला प्रारंभ की। 1976 से 1977 की अवधि में चार कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 57 प्रधानाचार्यों ने भाग लिया।

तमिलनाडु के महाविद्यालय शिक्षा निदेशालय के अनुरोध पर स्टाफ कालिज ने मद्रास में 26 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 1977 तक समीक्षाधीन अवधि में राज्य के सरकारी महाविद्यालय के 26 प्रधानाचार्यों के लिए एक लघु अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया।

उद्देश्य

प्रशिक्षण कार्यक्रम निम्नलिखित मुख्य उद्देश्यों के लिए बनाया गया था :

(क) भाग लेने वालों को भारत तथा विदेश में उच्च शिक्षा की प्रचलित प्रवृत्तियों तथा मुख्य समस्याओं से परिचित कराना।

(ख) उन्हें राज्य के सेवा-नियमों तथा वित्तीय नियमों की अच्छी जानकारी देना।

(ग) संस्थागत नियोजन तथा विद्यार्थियों के हितों की देखभाल सहित संस्थागत विकास कार्यक्रमों में परिवर्तन अभिकर्ता के रूप में उनकी भूमिका के गुण विवेचन से अवगत कराना।

(घ) आधुनिक प्रबंध तकनीकों का सामान्य ज्ञान तथा विशेष रूप से शैक्षिक प्रबंधन के क्षेत्र में उनके अनुप्रयोग की जानकारी देना।

विषय वस्तु :

तमिलनाडु सरकार महाविद्यालय शिक्षा निदेशक के निकट परामर्श से कार्यक्रमों के विषयों को सतर्कता से चुना गया। कार्यक्रमों के विषय निम्न थे :

- उच्चतर शिक्षा में विश्व प्रवृत्तियां।
- भारत में स्वतंत्रता के बाद से उच्चतर शिक्षा का विकास।

- उच्चतर शिक्षा की समस्याएं तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की भूमिका।
- संस्थागत योजना।
- अनौपचारिक शिक्षा।
- संकाय का निष्पत्ति मूल्यांकन।
- दल गतिशीलता तथा लेन-देन विश्लेषण।
- महाविद्यालय स्तर पर वित्तीय प्रबंध।
- शैक्षणिक नियोजन में लागत-लाभ विश्लेषण।
- कार्मिक प्रशासन, नेतृत्व और अभिप्रेरणा।
- कालेजिएट शिक्षा पर 10+2+3 शिक्षा पद्धति का पड़ने वाला प्रभाव।
- पाठ्यक्रमों में नवीकरण।
- होटल प्रबंध।
- परीक्षा सुधार।
- महाविद्यालय विकास कार्यक्रम-संकाय विकास, पुस्तकालय, खेल और खेलकूद तथा विद्यार्थी कल्याण।
- उच्चतर शिक्षा में प्रबंध-तकनीकों का अनुप्रयोग।
- कार्य में विद्यार्थी नेतृत्व की शैली।
- राष्ट्रीय सेवा योजना तथा समाज के कमजोर वर्गों तथा स्त्रियों में उच्च शिक्षा के प्रसार में प्रधानाचार्यों की भूमिका।

पठन सामग्री

भाग लेने वाले प्रधानाचार्यों को चुनी हुई पठन सामग्री दी गई जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं :- "भारत में विश्वविद्यालयों के कार्य," "विश्वविद्यालय शिक्षा की पांचवीं पंचवर्षीय योजना का प्रारूप", "10+2+3 शिक्षा पद्धति के प्रारंभ की तैयारी", "स्नातक स्तर की शिक्षा में सुधार", "संकाय संवर्धन कार्यक्रम", "विद्यार्थी की सहभागिता", "अनौपचारिक शिक्षा", "नेतृत्व शैली", "नवाचारी पाठ्यचर्या "पाठ्यक्रमों का पुनर्गठन", "परीक्षा सुधार", "एक नया परिपेक्ष्य", "महाविद्यालय अध्यापकों का निष्पत्ति मूल्यांकन" "भारतीय विश्वविद्यालय में अनुशासनहीनता तथा विद्यार्थी नेतृत्व", "छात्रावास प्रबंध में सुधार", "महाविद्यालय पुस्तकालय के शैक्षिक कार्य", "समूह गति", "राष्ट्रीय सेवा योजना—एक पृष्ठभूमि शोध पत्र" (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग समीक्षा समिति की रिपोर्ट से उद्धरण)। राज्य से संबंधित शैक्षिक साख्यिकी तथा चुनी हुई संदर्भ ग्रंथ-सूची भी सहभागियों को दी गई।

विशेष गुण

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन समान रूप से प्रत्येक व्यक्ति के लिए संगोष्ठी के रूप में किया गया था—सहभागियों तथा विशेष व्यक्तियों को स्वतंत्र तथा स्पष्ट रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने के अवसर दिए गए थे। चुने हुए विषयों पर व्याख्यान-परिचर्चाओं तथा पैनल-परिचर्चाओं के अलावा "भाग लेने वालों की संगोष्ठी" की भी व्यवस्था की गई थी।

कार्यक्रम को मुख्यत: व्यावहारिक अभ्यास सहित संस्थागत नियोजन पर केन्द्रित किया गया था, तथा महाविद्यालय के प्रशासन तथा सामने आने वाली समस्याओं के समाधान में प्रधानाचार्य की भूमिका को विशिष्टता प्रदान की गई थी। भाग लेने वालों को किसी भी समस्या पर ऐसे केस अध्ययन तैयार करने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया जिसका उन्हें व्यक्तिगत अनुभव था और जिसे एक चुनौती माना जा सकता था तथा जिसका प्रमाण सफलता अथवा असफलता में निहित था। संस्थागत योजना की संकल्पना अवसर की समानता के महत्व पर, गुणवत्ता विकास की आवश्यकता पर, पाठ्यचर्या सुधार पर, तथा शिक्षा को राष्ट्रीय विकास, मानवशक्ति आवश्यकताओं तथा समुदाय सेवा से संबद्ध करने पर बल देती है। भाग लेने वालों ने संस्था के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को उजागर किया तथा अन्य संसाधनों के अधिकतम उपयोग के लिए नीति का निर्माण करने का प्रयत्न किया जिसमें वृद्धि और परिवर्तन की प्रक्रिया पर विशेष जोर दिया गया। औपचारिक शिक्षा तथा स्त्रियों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिवासियों में उच्च शिक्षा के विकास में प्रधानाचार्य की भूमिका पर बल दिया गया।

पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले प्राधानाचार्यों द्वारा अपने अपने महाविद्यालयों के लिए संस्थागत विकास के लिए कार्यक्रम का प्रारुप तैयार करना कार्यक्रम की अत्याधिक उल्लेखनीय विशेषता थी जिसमें संस्था की वृद्धि को सुनिर्धारित प्राथमिकता दी गई थी।

उद्घाटन तथा समापन

कार्यक्रम का उदघाटन 26 दिसंबर, 1977 को तामिलनाडु के शिक्षा मंत्री श्री सी० अरंगानायगम द्वारा किया गया। मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० मलकौल्म एस० अदीसेशिया ने 31 दिसम्बर, 1977 को समापन भाषण दिया।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए शैक्षिक संसाधन में प्रबंध संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम

(20 फरवरी से 25 फरवरी, 1978 तक)

शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए 20 फरवरी से 25 फरवरी, 1978 तक नई दिल्ली में शैक्षिक संसाधन में प्रबंध संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। यह अभिविन्यास कार्यक्रम प्रधानाचार्यों को शिक्षा में अनुप्रयुक्त आधुनिक प्रबंध तकनीकों से अवगत कराने के लिए केन्द्रीय विद्यालय संगठन तथा भारत में ब्रिटिश कौंसिल के परामर्श से बनाया गया था।

कार्यक्रम के उद्देश्य

अभिविन्यास कार्यक्रम का निर्माण केन्द्रीय विद्यालय संगठन तथा ब्रिटिश कौंसिल के परामर्श से किया गया था। कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्न थे :-

-सहभागियों को शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक प्रबंध तकनीकों के अनुप्रयोग से परिचित कराना।

- विशिष्ट प्रबंध संबंधी कौशलों का अभ्यास कराने में उनकी सहायता करना।

- अनुवर्ती क्रिया के लिए उन्हें योजना का विकास करने के योग्य बनाना।

सहभागी

दिल्ली प्रशासन के शिक्षा निदेशालय, केन्द्रीय विद्यालय संगठन तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा नामांकित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कुल 22 प्रधानाचार्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इनमें 20 प्रधानाचार्य केन्द्रीय विद्यालय संगठन से और शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड प्रत्येक से एक-एक प्रधानाचार्य नामांकित थे।

पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

जैसा कि ऊपर बताया गया है पाठ्यक्रम का निर्माण केन्द्रीय विद्यालय संगठन तथा ब्रिटिश कौंसिल के परामर्श से भाग लेने वालों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया था।

इस अभिविन्यास कार्यक्रम में व्याख्यान परिचर्चाएं, पैनल-परिचर्चायें, लघु समूह बैठक तथा क्षेत्र-वीक्षण आदि सम्मिलित थे। विचार-विमर्श के विषय निम्न थे :-

(1) शिक्षा में प्रबंध

(क) संकल्पनायें, लक्ष्य तथा उद्देश्य

(ख) प्रबंध तकनीक

(ग) निर्णय लेना और नेतृत्व

(घ) कार्मिक प्रबंध–विद्यालय प्रधानाचार्यों की सुपरवाइज़री भूमिका

(ङ) नवाचारों का प्रबंध।

(2) प्रशिक्षणात्मक संसाधनों का प्रबंध

(क) शिक्षा पाठ्यक्रम तथा तकनीक।

(ख) शिक्षा माध्यम।

(ग) कार्यमूलक शिक्षा।

(घ) विद्यालय के पुस्तकालय।

(3) गैर प्रशिक्षणात्मक संसाधनों का प्रबंध

(क) खेल और खेलकूद

(ख) अन्य सहपाठ्यचारी क्रियाकलाप

(ग) बजट संबधी तथा वित्तीय प्रबंध

(घ) विद्यालय स्वास्थ्य सेवायें

(ङ) समुदाय।

(4) संस्थागत नियोजन/योजना

कुछ सत्रों मे अध्यक्ष द्वारा प्रस्तुत विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए भाग लेने वालों को दो दलों में विभाजित किया गया और बाद में उन्हें दल के अनुसार अपने-अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए कहा गया।

भाग लेने वालों को सहपाठ्यचारी-क्रियाकलापों के संगठन से संबंधित व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त करवाने तथा दूरदर्शन के शिक्षा संबंधी प्रसारण से संबधित ज्ञान को व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करने के दिल्ली पब्लिक स्कूल तथा दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र में क्षेत्र-वीक्षण आयोजित किए।

शिक्षा-प्रौद्योगिकी केन्द्र, शिक्षण-सहायक सामग्री विभाग तथा ब्रिटिश कौंसिल की सहायता से "शिक्षा-माध्यम" पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। अभिविन्यास कार्यक्रम

की पूरी अवधि में त्रिवीमिय सामग्री वाले किटों जिसके साथ उसका साहित्य भी था, चित्रों, श्रव्य-दृश्य सामग्री पर मानचित्रों, चुने हुए मानचित्रों, प्रकाशित पुस्तकों तथा शैक्षिक खिलौनों आदि का प्रदर्शन किया गया।

उद्घाटन तथा समापन

कार्यक्रम का उद्घाटन 20 फरवरी 1978 को अनुवर्ती शिक्षा के लिए सार्वजनिक उद्यम केन्द्र के निदेशक प्रो० नितीश आर० डे० द्वारा किया गया तथा 25 फरवरी, 1978 को सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के केन्द्रीय मंत्री श्री एल० के० अडवानी ने समापन भाषण दिया।

भारत में विश्वविद्यालयों के वित्तीय अधिकारियों के लिए वित्तीय प्रबंधन में तीसरा प्रशिक्षण कार्यक्रम :

(नई दिल्ली : 29 अगस्त से 9 सितम्बर, 1977 तक)

वित्तीय कार्य आधुनिक प्रबंध के अत्यधिक महत्वपूर्ण पक्षों में से एक पक्ष है। विश्वविद्यालय के वित्तीय अधिकारियों के प्रशिक्षण की आवश्यकता अब कुछ समय से आवश्यक मानी जाने लगी है। अत: राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रबंध-अध्ययन संकाय के सहयोग से नई दिल्ली में 29 अगस्त से 9 सितम्बर, 1977 तक विश्वविद्यालयों के वित्तीय अधिकारियों के लिए तीसरे प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

उद्देश्य

प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्न थे --

(1) भाग लेने वालों को सामान्य रूप से सामान्य शिक्षा तथा विशेष रूप से उच्च शिक्षा की भूमिका और देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में उसके विशेष योगदान का गुण विवेचन करने योग्य बनाना;

(2) भारतीय विश्वविद्यालयों में वित्तीय प्रबंध की वर्तमान पद्धति की बेहतर जानकारी को बढ़ाना तथा भारत में उच्चतर शिक्षा के बदलते हुए आयामों के विशेष संदर्भ में उसकी प्रणालीबद्ध समीक्षा को सरल बनाना;

(3) भारतीय विश्वविद्यालयों में वित्तीय कार्य की नई भूमिका और उत्तरदायित्वों को पहचानने और उन्हें समझने में सहायता करना तथा शैक्षिक कार्यक्रमों में उसके प्रभाव का मूल्यांकन करना; तथा

(4) सामान्य रूप से आधुनिक प्रबंध तकनीकों तथा विशेष रूप से आधुनिक वित्तीय-प्रबंध की जानकारी को विशेष रूप से शिक्षा प्रशासन में उनके अनुप्रयोग की दृष्टि से बढ़ावा देना।

भाग लेने वाले

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में रौहिलखंड, कलकत्ता, उत्तरपूर्वीय पर्वतीय क्षेत्र के विश्वविद्यालय, बंगलौर, मगध, गढ़वाल, कालीकट, हिमाचल प्रदेश और मेरठ के 9

वित्तीय अधिकारियों ने भाग लिया । मध्यप्रदेश के उच्च शिक्षा अनुदान आयोग के वित्तीय अधिकारी ने भी एक विशेष अतिथि के रूप में भाग लिया ।

पाठ्यक्रम निर्माण

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम वित्तीय अधिकारियों की व्यावसायिक आवश्यकताओं पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रबंध अध्ययन संकाय से विस्तृत चर्चा करके सावधानी से तैयार किया गया था । सामान्य व्याख्यामूलक परिचर्चाओं के अतिरिक्त "वित्तीय अधिकारियों" तथा "विश्वविद्यालय बजट के प्रारूप" पर दो पैनल परिचर्चायें भी आयोजित की गई ।

भाग लेने वालों द्वारा अपने अपने विश्वविद्यालयों के लिए क्रियानिष्ठ कार्यक्रम तैयार करना प्रशिक्षण कार्यक्रम की मुख्य विशेषताओं में से एक था । भाग लेने वालों को दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रबंध अध्ययन संकाय तथा वित्तीय प्रशासन अनुभाग में वीक्षण करने के अवसर भी दिए गए ।

मुख्य विषय

कार्यक्रम के मुख्य विषय निम्न थे :—

— वित्तीय अधिकारियों की भूमिका ।

— भारत में उच्च शिक्षा

— भारत में शैक्षणिक नियोजन; गुणात्मक तथा परिमाणात्मक

— शिक्षा वित्त की संकल्पनायें तथा तकनीक विश्वविद्यालयों में वित्तीय प्रशासन प्रणाली

— समूह गतिकी तथा संवेदनशीलता प्रशिक्षण

— प्रबंध लेखा-शैक्षिक प्रबंधन के एक उपकरण के रूप में

— उच्च शिक्षा की योजना में वित्तीय पक्ष

— विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा उसकी कार्य पद्धति

— राज्य सरकार द्वारा विश्वविद्यालयों को अनुदान सहायता

— विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विश्वविद्यालय के वित्तीय संबंध

— आंतरिक लेखा परीक्षण

— नकदी प्रवाह विश्लेषण

— योजना-कार्यक्रमण-बजट पद्धति (पी. पी. बी. एस.)

— विश्वविद्यालयों में प्रत्यायोजन तथा नियंत्रण

— वित्तीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग

— वित्तीय सूचना पद्धति

— वित्तीय समिति का गठन और कार्य पद्धति

— वित्तीय समिति की भूमिका और कार्य

— संक्रियात्मक अनुसंधान का प्रारंभ

— विश्वविद्यालय बजट का प्रारूप

— शैक्षणिक प्रशासन के प्रति पद्धतिबद्ध उपागम/दृष्टिकोण

— विश्वविद्यालय वित्तीय स्थिति-विवरण का निर्माण तथा उसकी व्याख्या

— राजस्व, योजना तथा परिवीक्षण

— लेखाओं को बनाना तथा उसकी संभाल

— कालेजिएट संस्थाओं को राज्यकीय सहायता-प्रतिमान तथा प्रक्रिया।

उद्घाटन तथा समापन

कार्यक्रम का उद्घाटन 29 अगस्त, 1977 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष डा. बी. रामाचन्द्रराओ ने किया। इसका समापन 9 सितम्बर, 1977 को हुआ जब भारत सरकार के राज्य वित्तीय मंत्री श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल ने समापन भाषण दिया।

राज्य सेवा योजना के मुख्य कार्मिकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

(नई दिल्ली : 11 अप्रैल से 14 अप्रैल 1977 तक, 25 जुलाई से 28 जुलाई 1977 तक तथा 22 अगस्त से 25 अगस्त, 1977 तक)

शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय के युवा केन्द्र के अनुरोध पर तथा दिल्ली स्कूल आफ सोशल वर्क के सहयोग से स्टाफ कालिज ने राष्ट्रीय सेवा योजना के मुख्य कार्मिकों के लिए 1976 से 1977 की अवधि में अभिविन्यास कार्यक्रमों की एक श्रृखला प्रारम्भ की। पहला अभिविन्यास कार्यक्रम 14 फरवरी से 17 फरवरी, 1977 तक हुआ जिसमें 39 व्यक्तियों ने भाग लिया। समीक्षाधीन वर्ष में 11 अप्रैल से 14 अप्रैल, 1977 तक, 25 जुलाई से 28 जुलाई, 1977 तक तथा 22 अगस्त से 25 अगस्त, 1977 तक तीन अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए।

उद्देश्य

कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्न थे :-

(क) राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यान्वित में लगे हुए मुख्य कार्मिकों को अपने विचारों के आदान प्रदान के लिए एक दूसरे के निकट आने के अवसर प्रदान करना;

(ख) राष्ट्रीय सेवा योजना की संकल्पना, नीति तथा कार्यक्रमों पर चर्चा करना तथा

(ग) राष्ट्रीय सेवा योजना के संगठनात्मक और प्रशासनिक पहलुओं पर विचार विमर्श करना जिसमें पर्यवेक्षण, सहयोग तथा समन्वय, परिवीक्षण, मूल्यांकन आदि सम्मिलित हैं।

भाग लेने वाले

समीक्षाधीन वर्ष की अवधि में आयोजित तीन कार्यक्रमों में 105 व्यक्तियों ने भाग लिया : 42 व्यक्तियों ने दूसरे कार्यक्रम में (11 अप्रैल से 14 अप्रैल, 1977 तक) 28 व्यक्तियों ने तीसरे कार्यक्रम में (25 जुलाई से 28 जुलाई, 1977 तक) तथा 35 व्यक्तियों ने चौथे कार्यक्रम में (22 अगस्त से 25 अगस्त, 1977 तक)।

मुख्य विषय

परिचर्चा के लिए मुख्य विषय निम्नलिखित थे :-

— भारत में युवा कार्यक्रमों का विकास

— राष्ट्रीय विकास में युवाओं का योगदान ।

— राष्ट्रीय सेवा योजनाओं के अंतर्गत कार्यक्रम विकास ।

— रिपोर्ट तथा रिकार्ड रखना ।

— राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत विभिन्न स्तरों पर विविध कार्यकर्ताओं की भूमिका ।

— राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत पर्यवेक्षण, सहयोग और समन्वय ।

— राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत लेखा परीक्षा और लेखा ।

पाठ्यक्रम विषय वस्तु

भारत सरकार के शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय तथा दिल्ली स्कूल आफ सोशल वर्क के परामर्श से भाग लेने वालों की विशिष्ट आवश्यकताओं कीं पूर्ति के लिए यह अभिविन्यास कार्यक्रम सावधानी से बनाया गया था । सामान्य व्याख्यामूलक परिचर्चाओं के अतिरिक्त निम्नलिखित विषयों पर तीन पैनल परिचर्चायें भी आयोजित की गई थीं ।

(1) राष्ट्रीय विकास में युवक का योगदान ।

(2) राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत कार्यक्रम विकास ।

(3) राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत लेखा परीक्षण तथा लेखा ।

कार्यक्रम संगोष्ठियों की तरह से बराबरी के स्तर पर संचालित किए गए जिसमें भाग लेने वालों के आपस में और विशिष्ट व्यक्तियों के साथ स्वतंत्र और मुक्त परिचर्चाओं को बढ़ावा दिया गया । भाग लेने वालों में अनुभवों के आदान प्रदान के लिए एक विशेष सत्र आयोजित किया गया जिसमें न केवल सफलता कीं कथाएं ही कही गयीं बल्कि राष्ट्रीय सेवा योजना के क्रियाकलापों के कार्यान्वियन में आने वाली कठिनाइयों पर भी विचार किया गया ।

पाठ्य सामग्री

प्रथम कार्यक्रमों में भाग लेने वालों में बांटने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना के विभिन्न पक्षों पर चुने हुए शोधपत्रों का एक खंड तैयार किया गया जबकि तीसरे और चौथे कार्यक्रमों में भाग लेने वालों को दो खंड उपलब्ध थे। खंड दो में संगोष्ठी की रिपोर्टों के संबद्ध उद्धरण, भारतीय विश्व विद्यालयों के संघ की समितियों तथा उपकुलपतियों के सम्मेलनों के कार्यवृत्त और 1973 से 1974 तक 1974 से 1975 तक की अवधियों में आयोजित विशिष्ट शिविरों की रिपोर्ट आदि दीं गई हैं। इसके साथ साथ इस खंड में राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत नियमित संख्या को दर्शाने वाली महत्त्वपूर्ण सारणियां और 1974 से 1975 तक तथा 1975 से 1976 तक की अवधियों में राष्ट्रीय सेवा योजना पर होने वाला खर्च (केन्द्र का भाग) तथा केन्द्रीय/क्षेत्रीय तथा राज्य स्तरों पर राष्ट्रीय सेवा योजना का गठन भी दिया गया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना पर एक आधार शोध पत्र, एशियाई क्षेत्र के कुछ अन्य देशों में राष्ट्रीय विकास में विद्यार्थियों को संबद्ध करने के लिए योजनाओं के विस्तृत ब्यौरे से संबंधित शोध पत्र तथा 'युवा और उनकी समस्याएं' आदि विषय पर एक चुनी हुई ग्रंथसूची भी भाग लेने वालों में बाँटी गयीं। इसके अतिरिक्त भाग लेने वालों ने राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों के कार्यान्वयन से प्राप्त होने वाले अनुभवों तथा कार्यान्वयन की प्रक्रिया के दौरान आनेवाली कठिनाइयों पर अत्यधिक प्रकाश डालने वाली टिप्पणियां भी तैयार की।

संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के एक चुने हुए समूह के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

(नई दिल्ली : 5 अप्रैल से 7 अप्रैल, 1977 तक)

भारत में संयुक्त राज्य शैक्षिक प्रतिष्ठान के अनुरोध पर शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने 5 अप्रैल से 7 अप्रैल 1977 तक संयुक्त राज्य शिक्षा प्रतिष्ठान की प्रशासनिक परियोजना के अंतर्गत अमरीका जाने वाले महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के एक चुने हुए समूह के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया ।

उद्देश्य

कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्न थे :

— अपने अपने राज्यों के विशेष संदर्भ में भारत में उच्चतर शिक्षा के विकास से सहभागियों को परिचित कराना;

— सहभागियों को शिक्षा प्रशासन की विभिन्न समस्याओं के संबंध में अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करने योग्य बनाना;

— संयुक्त राज्य अमरीका में उच्चतर शिक्षा के प्रतिमान से सहभागियों को अवगत कराना;

— सहभागियों को भारत तथा विदेशों में उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक प्रवृत्तियों की तुलना करने योग्य बनाना ।

इस कार्यक्रम में तमिलनाडु, उड़ीसा, बिहार, आंध्र प्रदेश, राजस्थान तथा संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली के छह प्रधानाचार्यों ने भाग लिया ।

यह अभिविन्यास कार्यक्रम भारत में संयुक्त राज्य शिक्षा प्रतिष्ठान से विस्तृत चर्चा करने के पश्चात् बनाया गया था । इसमें निम्न विषय सम्मिलित थे :

— भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में स्वातंत्र्योत्तर विकास की समीक्षा;

— संयुक्त राज्य अमरीका में उच्च शिक्षा;

— महाविद्यालय और समुदाय के सबंधों की समस्यायें;

— विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा भारत में उच्चतर शिक्षा का विकास

— स्वायत महाविद्यालयों की संकल्पनायें तथा उनकी संभावनायें;

— संकाय सुधार कार्यक्रम:

— भारतीय उच्चतर शिक्षा में विद्यार्थी सेवा कार्यक्रम;

— उच्चतर शिक्षा का मूल्यांकन।

यह अभिविन्यास कार्यक्रम अंतराविज्ञानीय आधार पर नियोजित किया गया था तथा इसमें व्याख्या मूलक विचार विमर्श तथा पैनल परिचर्चायें आयोजित की गई थीं।

उच्चतर शिक्षा के कुछ पक्षों पर संगोष्ठी

(नई दिल्ली : 4 अगस्त से 6 अगस्त, 1977)

राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने उच्चतर शिक्षा के प्रशासन के कुछ पक्षों पर 4 अगस्त से 6 अगस्त, 1977 तक एक संगोष्ठी का आयोजन किया। यह संगोष्ठी उन प्रधानाचार्यों के एक चुने हुए समूह के लिए एक अनुवर्ती कार्यक्रम था जिन्होंने स्टाफ कालिज द्वारा 5 अप्रैल से 7 अप्रैल 1977 तक आयोजित एक अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लिया था और जो भारत में संयुक्त राज्य शिक्षा प्रतिष्ठान की भारतीय विश्वविद्यालय-प्रशासक परियोजना, 1977 के अंतर्गत संयुक्त राज्य अमरीका गए थे।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य संयुक्त राज्य अमरीका में उन आधुनिक प्रवृत्तियों की समीक्षा करना था जो भारतीय परिस्थिति के लिए अनुकूल हैं। इस संगोष्ठी में आँध्र प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु तथा संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली के छह प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। पटना विश्वविद्यालय के उपकुलपति सहित विख्यात शिक्षाविदों के एक चुने हुए समूह, आंध्र प्रदेश, बिहार, राजस्थान तथा तमिलनाडु में उच्चतर शिक्षा-निदेशकों, अहमदाबाद की भारतीय प्रबंधन संस्थान के एक प्रतिनिधि, (शिक्षा) योजना आयोग के अध्यक्ष तथा विश्वबिद्यालय अनुदान आयोग के सचिव ने भी प्रधानाचार्यों से अपने अनुभवों का आदान-प्रदान इस दृष्टि से किया कि भाग लेने वालों के राज्यों में एक क्रियानिष्ट कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा सके।

संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालय के प्रधानाचार्यों के चुने हुए समूह के लिए दूसरा अभिविन्यास कार्यक्रम

(नई दिल्ली : 20 मार्च से 22 मार्च, 1978 तक)

भारत में संयुक्त राज्य शिक्षा प्रतिष्ठान के अनुरोध पर शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने 20 मार्च से 22 मार्च, 1978 तक यू. एस. ई. एफ. आई. की विश्वविद्यालय-प्रशासक परियोजना, 1978 के अंतर्गत संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के एक चुने हुए समुह के लिए तीन दिन का एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया ।

उद्देश्य

इस अभिविन्यास कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्न थे :—

1. अपने अपने राज्यों के विशेष संदर्भ में भारत में उच्चतर शिक्षा के विकास से भाग लेने वालों को परिचित कराना;

2. भाग लेने वालों को शैक्षिक प्रशासन की विभिन्न समस्याओं के संबंध में अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करने योग्य बनाना;

3. वर्तमान संरचना में संभावित शैक्षिक नवाचारों पर विचार-विमर्श करना;

4. भाग लेने वालों को संयुक्त राज्य अमरीका में उच्चतर शिक्षा के प्रतिमान से अवगत कराना तथा भारत और अमरीका में उच्चतर शिक्षा की आधुनिक प्रवृतियों की तुलना करना ।

सहभागी

इस कार्यक्रम में बिहार, गुजरात, तमिलनाडु, आसाम, महाराष्ट्र तथा संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली के महाविद्यालयों से छह प्रधानाचार्यों ने भाग लिया ।

मुख्य विषय

यह अभिविन्यास कार्यक्रम भारत में संयुक्त राज्य शिक्षा प्रतिष्ठान से विस्तृत विचार विमर्श करने के पश्चात् सावधानी से बनाया गया। इसमें निम्न विषयों पर विचार किया गया—

1. भारत में उच्चतर शिक्षा का पुनर्गठन;
2. संयुक्त राज्य अमरीका में उच्चतर शिक्षा;
3. भारत में उच्चतर शिक्षा-विहंगावलोकन;
4. उच्चतर शिक्षा में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की भूमिका;
5. भारतीय उच्चतर शिक्षा में विद्यार्थियों की सेवा;
6. संकाय संवर्धन कार्यक्रम;
7. उच्च शिक्षा में मूल्यांकन;
8. महाविद्यालय तथा समुदाय में अन्योन्यक्रिया;
9. महाविद्यालय प्रशासन में सुधार; तथा
10. संयुक्त राज्य अमरीका का प्रारंभिक सांस्कृतिक सर्वेक्षण।

पाठ्यक्रम विषयवस्तु

यह अभिविन्यास कार्यक्रम अंत:शास्त्रीय आधार पर आयोजित किया गया था। इसके अंतर्गत व्याख्यामूलक विचार विमर्श तथा पैनल परिचर्चायें आयोजित की गई थीं।

उद्घाटन तथा समापन

इस अभिविन्यास कार्यक्रम का प्रारंभ 20-3-78 को राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के निदेशक प्रो. एम. वी. माथुर द्वारा प्रारंभ की गई एक महत्वपूर्ण व्याख्यामूलक परिचर्चा से हुआ तथा भारत सरकार के भूतपूर्व शिक्षा सचिव एवं यूनेस्को कार्यकारी बोर्ड के अध्यक्ष डा. प्रेम किरपाल ने सत्र की अध्यक्षता की। भारत में संयुक्त राज्य शिक्षा प्रतिष्ठान के निदेशक श्री सी. एस. रामकृष्णन ने 22 मार्च, 1978 को अंतिम सत्र की अध्यक्षता की।

संयुक्त राज्य अमरीका के सामाजिक अध्ययनों के अधीक्षकों तथा पाठ्यक्रम निदेशकों के लिए भारतीय इतिहास तथा संस्कृति में कार्यगोष्ठी

(नई दिल्ली : 21 जून से 14 जुलाई, 1977 तक)

भारत में संयुक्त राज्य शिक्षा प्रतिष्ठान के अनुरोध पर तथा शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय की सहमति से राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने 21 जून से 14 जुलाई, 1977 तक संयुक्त राज्य अमरीका के सामाजिक अध्ययनों के अधीक्षकों तथा पाठ्यक्रम-निदेशकों के लिए चार सप्ताह की एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्देश्य

संयुक्त राज्य अमरीका के सामाजिक अध्ययनों के अधीक्षकों तथा पाठ्यक्रम-निदेशकों की व्यावसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारत में संयुक्त राज्य शिक्षा प्रतिष्ठान के परामर्श से कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यगोष्ठी के मुख्य उद्देश्य निम्न थे :—

(क) भाग लेने वालों को भारतीय इतिहास तथा संस्कृति के विभिन्न पक्षों से परिचित कराना;

(ख) भाग लेने वालों को भारत में शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक प्रवृत्तियों और विकास से परिचित कराना;

(ग) ऐतिहासिक प्रवृत्तियों तथा आधुनिक भारतीय प्रवृत्तियों की जानकारी को बढ़ावा देना जिससे भाग लेने वाले संयुक्त राज्य के विद्यालयों में भारतीय इतिहास और संस्कृति की शिक्षा में सुधार ला सकें, तथा

(घ) भाग लेने वालों के द्वारा भारत तथा संयुक्त राज्य अमरीका के बीच पारस्परिक बोध को बढ़ाना।

सहभागी

इस कार्यक्रम में संयुक्त राज्य अमरीका के 11 राज्यों के 19 शिक्षाविदों ने भाग लिया।

शैक्षिक कार्यक्रम

इस कार्यगोष्ठी में निम्न कार्यक्रम सम्मिलित थे :—

(क) राष्ट्रीय स्टाफ कालिज द्वारा आयोजित चार सप्ताह का शैक्षिक कार्यक्रम जिसके अंतर्गत भाग लेने वालों द्वारा प्रस्तुत दो विषयों सहित भारतीय इतिहास और संस्कृति के विविध पक्षों पर 31 व्याख्यान परिचर्चायें आयोजित की गई थीं। इन व्याख्यानों ने आधुनिक भारत तथा उसके उज्जवलित अतीत को समझने के लिए एक विस्तृत ऐतिहासिक परिपेक्ष्य तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रदान की;

(ख) संग्रहालयों, औद्योगिक क्षेत्रों, संस्थाओं, सांस्कृतिक स्थानों तथा ग्रामों में क्षेत्र-वीक्षण;

(ग) राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के संकाय सदस्यों तथा क्षेत्र में अन्य विशेषज्ञों से अनौपचारिक बैठकें।

मुख्य विषय

कार्यगोष्ठी में निम्न विषयों पर विचार विमर्श किया गया :—

— विविध कालों में भारत-विहंगावलोकन
— पूर्व ऐतिहासिक तथा प्राचीन भारत
— इसलाम धर्म का प्रभाव
— यूरोपीयन युग
— भारत में स्त्रियों की परिवर्तित भूमिका
— शिशु पालन तथा पारिवारिक जीवन
— राष्ट्रीय आंदोलन तथा गाँधी जी की विरासत
— भारतीय सामाजिक पद्धति
— भारतीय विदेश नीति-तर्काधार तथा पद्धतियाँ
— भारत में खेल और खेलकूद
— औद्योगिक दृश्य
— भारतीय नीति
— भारतीय दरिद्रता
— सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए योजना

— भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य
— भारतीय मूल वाले धर्म
— गैर-भारतीय मूल वाले धर्म
— आधुनिक संचार में परंपरागत माध्यम का प्रयोग
— भारतीय साहित्यिकदाय
— भारतीय मूल्य-पद्धति
— ग्रामीण भारत में परम्परा और परिवर्तन
— भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के संसाधन तथा सामर्थ्य
— जनाँकिकीय/जनसांख्यिकी कारक और विकास
— भारतीय चित्रकारी की परम्परा
— भारतीय शिक्षा के मसले तथा समस्यायें
— भारत में शैक्षिक प्रशासन
— भारत में शैक्षिक नियोजन
— भारतीय शिक्षा का उभरता हुआ स्वरूप
— भारतीय कृषि-दृश्य
— भारतीय युवा

क्षेत्रवीक्षण

इसके अतिरिक्त भाग लेने वालों ने निम्नलिखित संस्थाओं में उनके कार्य तथा क्रिया-पद्धति का व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करने के लिए क्षेत्र-वीक्षण किया :—

— गाँधी संग्रहालय
— कुतुब मीनार महरौली
— ओखला औद्योगिक क्षेत्र : डिज़ाइन केंद्र
— नजफगढ़ में अनौपचारिक शिक्षा केंद्र
— भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
— लोक सभा (भारतीय संसद का निम्न भवन)
— राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
— राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली
— भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली
— बरनाला ग्राम : राष्ट्रीय सेवा योजना केंद्र (दिल्ली स्कूल आफ सोशल वर्क)
— दिल्ली पब्लिक स्कूल, रामकृष्णापुरम, सेक्टर-12, नई दिल्ली

— राष्ट्रीय अभिलेखागार
— अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय
— राष्ट्रीय संग्रहालय
— नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय
— दिल्ली का चिड़ियाघर

भेंट

भाग लेने वालों ने उस समय भारत के कार्यकारी राष्ट्रपति श्री बी. डी. जत्ती, प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई तथा शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय के केन्द्रीय मंत्री डा: प्रताप चन्द्र चन्द्र से भी भेंट की।

फिल्म प्रदर्शन

सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय, राष्ट्रीय संग्रहालय तथा शिक्षा-प्रौद्योगिकी केन्द्र (एन. सी. ई. आर. टी.) के सहयोग से फिल्म प्रदर्शन भी आयोजित किए गए।

उद्घाटन तथा समापन

कार्यक्रम का उद्घाटन 21 जून 1977 को राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के निदेशक प्रो. एम. वी. माथुर ने किया तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. सतीशचन्द्र ने 14 जुलाई 1977 को समापन भाषण दिया।

अफगानिस्तान सरकार के शिक्षा योजना विभाग के अध्यक्ष श्री एम. टी. पोरोजोश के लिए कार्यक्रम

(नई दिल्ली : 4 दिसम्बर से 12 दिसम्बर, 1977 तक)

बैंकाक स्थित यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय के अनुरोध पर अफगानिस्तान सरकार के शिक्षा योजना विकास के अध्यक्ष श्री एम. वी. पोरोजोश के लिए पर्यवेक्षण के साथ साथ विचार विमर्श का कार्यक्रम आयोजित किया। श्री पोरोजोश 4 दिसम्बर, 1977 को पधारे। संकाय के विभिन्न सदस्यों से उनकी परिचर्चायें आयोजित की गयीं जिन्होंने उन्हें भारत की शैक्षिक पद्धति में आने वाली समस्याओं तथा समस्याओं के प्राप्त समाधानों की विहंगम दृष्टि प्रस्तुत की।

केन्द्र तथा राज्यों में शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन के गठन को बलशाली बनाने के लिए राष्ट्रीय स्टाफ कालिज द्वारा आयोजित कार्यक्रम से भी उन्हें अवगत कराया गया। शिक्षा मंत्रालय, योजना आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा अनुप्रयोग मानवशक्ति अनुसंधान संस्थान से भी उनकी परिचर्चायें आयोजित की गई।

8 दिसम्बर को उन्होंने मद्रास के लिए प्रस्थान किया जहाँ राज्य सरकार से उन्होंने विचार विमर्श किया तथा राज्य और निम्न स्तरों पर शिक्षा योजना प्रक्रिया की कुछ झलकियां उन्हें देखने को मिली। मद्रास में वे विद्यालय शिक्षा के निदेशक तथा अन्य अधिकारियों से मिले। मद्रास विश्वविद्यालय के उप-कुलपति, तकनीकी शिक्षा के निदेशक, राज्य योजना आयोग तथा कालिजिएट शिक्षा के निदेशक से भी उन्होंने बैठक की। जिला स्तर पर शैक्षिक नियोजन तथा प्रशासन की समस्याओं पर अध्ययन करने के लिए वे काँचीपुरम के मुख्य शिक्षा अधिकारी तथा चिंगलपुट के जिला शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में भी उन्होंने वीक्षण किया। तत्पश्चात् मद्रास में अपनी परिचर्चाओं को अंतिम रूप देने के लिए उन्होंने शिक्षा सचिव से भेंट की।

अफ़गानिस्तान और बर्मा के शिक्षा अधिकारियों के लिए अध्ययन-प्रेक्षण कार्यक्रम

(नई दिल्ली : 2 जनवरी से 14 जनवरी 1978 तक)

बैंकाक में स्थित एशिया में शिक्षा से संबंधित यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय के अनुरोध पर राष्ट्रीय स्टाफ कालिज ने 2 जनवरी से 41 जनवरी, 1978 तक अफ़गानिस्तान तथा बर्मा के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के लिए एक संक्षिप्त अध्ययन-प्रेक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

उद्देश्य

भारत में विविध अवस्थाओं (पूर्व प्राथमिक से लेकर स्नातकोतर स्तर तक) तथा विविध स्तरों-राष्ट्र, राज्य, ज़िला तथा ब्लाक पर शैक्षणिक नियोजन तथा प्रशासन की पद्धति से भाग लेने वालों को परिचित कराना कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था।

सहभागी

इस कार्यक्रम में 13 व्यक्तियों ने भाग लिया जिसमें 5 व्यक्ति अफ़गानिस्तान से और 8 बर्मा देश से थे।

पाठ्यक्रम विषय वस्तु

भाग लेने वालों को भारत में शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन की पद्धति से परिचित कराने के मुख्य उद्देश्य को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम को सावधानी से बनाया गया था। चुने हुए विषयों पर व्याख्यामूलक विचार विमर्श के अतिरिक्त भाग लेने वालों को नीति निर्धारित करने और उसे क्रियान्वित करने के लिए उत्तरदायी कुछ विशेष संस्थानों में क्षेत्र-वीक्षण के लिए ले जाया गया जिससे वे व्यक्तिगत रूप से स्थितियों का जायज़ा ले सकें। राज्य स्तर पर शैक्षणिक नियोजन और प्रशासन की पद्धति तथा स्थानीय स्तर पर शिक्षा का प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण का अध्ययन करने के लिए भाग लेने वालों ने महाराष्ट्र का भी दौरा किया। जिला स्तर पर कार्य पद्धति का अध्ययन करने के लिए वे आगरा भी गए।

विषय

व्याख्यान-परिचर्चाओं के मुख्य विषय निम्न थे :

— प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण के लिए योजना-भारतीय अनुभव ।

— भारत में शिक्षा पद्धति का प्रारंभ-संरचना तथा गठन ।

— भारत में शैक्षणिक नियोजन पद्धति का प्रारंभ
(ब्लाक स्तर पर लघु योजना सहित)

— भारत में अनौपचारिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा की योजना ।

— दिल्ली में विद्यालयों का निरीक्षण तथा पर्यवेक्षण ।

— विद्यालय पाठ्यक्रम में सुधार करने के लिए नियोजन-हाल के भारतीय अनुभव ।

क्षेत्र-वीक्षण

— शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र

— विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

— जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यायय (क्षेत्रीय विकास केन्द्र)

— शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन

— योजना आयोग

— शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

— दक्षिणी दिल्ली का शिक्षा क्षेत्र

— शिक्षा विभाग, दिल्ली नगरपालिका

— केंद्रीय विद्यालय, आर. के. पुरम, सैक्टर-4

— अनुप्रयुक्त मानवशक्ति अनुसंधान संस्थान

उद्घाटन और समापन

कार्यक्रम का उद्घाटन 2 जनवरी, 1978 को यूनेस्को कार्यपालिका परिषद के अध्यक्ष तथा भूतपूर्व शिक्षा सचिव डा. प्रेम किरपाल ने किया । राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के निदेशक प्रो. एम. वी. माथुर वे 13 जनवरी, 1978 को समापन भाषण ।

सहभागी तथा विशेष व्यक्ति

एक वर्ष (1978) की अवधि में आयोजित प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रमों में भाग लेने वाले सदस्य निम्नलिखित हैं—जम्मू-काशमीर, तमिलनाडु, नागालैंड, गुजरात, केरल, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, आसाम, कर्नाटक, पंजाब, पश्चिम बंगाल, संघीय राज्य दिल्ली तथा गोआ, दमन और दियू का प्रतिनिधित्व करने वाले 41 राज्य शिक्षा योजना अधिकारी, विभिन्न विश्वविद्यालयों से 10 वित्तीय अधिकारी तथा विकास शधिकारी, 166 जिला शिक्षा अधिकारी तथा केन्द्रीय और राज्य सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, सिक्किम, मध्यप्रदेश, केन्द्र शासित अरुणाचल प्रदेश, अंडमान निंकोबार द्वीप तथा केन्द्रीय विद्यालय संगठन का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्यालय प्रधावाचार्य, तमिलनाडु, उड़ीसा, बिहार, आंध्रप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, आसाम, महाराष्ट्र तथा संघीय राज्य दिल्ली के महाविद्यालयों के 38 प्रधानाचार्य, आसाम, बिहार, केरल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु तथा संघीय राज्य दिल्ली और अरुणाचल प्रदेश की राष्ट्रीय सेवा योजना के 105 मुख्य अधिकारी; अफ़गानिस्तान के शैक्षणिक नियोजन विभाग के अध्यक्ष (1) यूनेस्को द्वारा प्रायोजित अफगानिस्तान तथा बर्मा के 13 शिक्षा अधिकारी, संयुक्त राज्य शिक्षा प्रतिष्ठान द्वारा प्रायोजित 19 अमरीकी व्यक्ति।

विशेष व्यक्तियों में निम्नलिखित हैं—शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, योजना आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आबोग, राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय आदि के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी तथा स्टाफ कालिज के संकाय सदस्य।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल्यांकन

प्रत्येक कार्यक्रम के मूल्यांकन की व्यवस्था की गई है। प्रशिक्षण-क्षेत्र में किये जाने वाले दिन-प्रतिदिन के कार्यों से प्राप्त अनुभव को ध्यान में रखते हुए पूर्वोक्त कार्यक्रम में क्या-क्या परिवर्तन होने चाहिए इस पर विचार करने के लिए प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए गठित संचालन समिति, जिसमें संबंधित संकाय के सदस्य और भाग लेने वाले सदस्य शामिल रहते हैं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी साथ ही साथ करती चलती है।

कार्योत्तर मूल्यांकन करने के लिए भाग लेने वाले सदस्यों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन ही मूल्यांकन प्रपत्र दे दिए जाते हैं। किन्तु वे इन प्रपत्रों से शैक्षिक कार्यक्रम संबंधी अपने पुंजीभूत अनुभवों की सूचना देते हैं और अंतिम सत्र से एक दिन पहले ये प्रपत्र समन्वयक को सौंप दिये जाते हैं। मूल्यांकन को स्वतंत्र तथा मुक्त रखने के लिए भाग लेने वालों के लिए प्रपत्रों पर हस्ताक्षर करना अपेक्षित नहीं है। इस सबके बाद कार्यक्रम के अंतिम दिन निदेशक द्वारा आयोजित मूल्यांकन सत्र की बैठक होती है जिसमें भाग लेने वाले सदस्य शैक्षिक या संगठनात्मक किसी भी विषय पर अपने-अपने विचार खुलकर व्यक्त कर सकते हैं।

स्टाफ कालिज अपने प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रकों में भाग लेने वालों द्वारा प्राप्त प्रतिपुष्टि से पूरा लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। वर्ष भर में आयोजित अनेक पाठ्यक्रमों में व्यावहारिक अभ्यासों को पहले से अधिक महत्व दिया गया। उदाहरणार्थ भीमताल में उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में उद्दीपन तथा भूमिका निर्वाह तकनीकों पर आधारित व्यावहारिक अभ्यास ही कार्यक्रम का मुख्य भाग माना गया। राज्य शिक्षा योजना अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वालों को विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अगली पंचवर्षीय योजना का शून्य प्रारूप तैयार करने तथा अंतरक्षेत्रीय सम्पर्कों की आवश्यकताओं को जानने के लिए अभ्यास करवाये गए। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए शैक्षिक संसाधनों के प्रबंध संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम के लिए प्रशासनिक पक्षों जैसे निर्णय लेना आदि संबंधित कुछ अभ्यास विशेष रूप से तैयार किए गए थे। कार्यक्रम में उचित क्षेत्र-वीक्षणों को भी सम्मिलित किया गया था।

नए विकास तथा भाग लेने वालों की अनुभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को समृद्ध बनाया गया।

भाग लेने वालों तथा प्रयोजकों की आवश्यकताओं के अनुसार विविध अवधियों के प्रक्षिणण और अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अनुसंधान और अध्ययन शिक्षा प्रशासन का अखिल भारतीय सर्वेक्षण

तृतीय शैक्षणिक सर्वेक्षण के एक अंग के रूप में विभिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्रों में शैक्षिक प्रशासन संबंधी एक अखिल भारतीय सर्वेक्षण किए जाने का निर्णय किया गया। देश में इस प्रकार का यह पहला सर्वेक्षण कार्य था।

उद्देश्य

इस सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य विभिन्न स्तरों-यथा राष्ट्रीय, राज्य तथा ज़िला स्तरों पर, शैक्षिक प्रशासन के वर्तमान स्तर का पता लगा कर देश में शिक्षा प्रशासन को शक्तिशाली तथा आधुनिक बनाने की जानकारी प्रदान करना था। सर्वेक्षण में विभिन्न स्तरों पर शिक्षा प्रशासन संबंधी सरकारी तंत्र की वर्तमान व्यवस्था और कार्यों की व्याख्या तथा नियोजन और कार्यान्वयन के बीच की दूरी को समाप्त करने के लिए आंकड़ों के विश्लेषण का प्रयास किया गया।

पर्यवेक्षण कार्य के लिए यूनेस्को की शिक्षा की परिभाषा इस प्रकार का सुव्यवस्थित और दीर्घकालिक शिक्षण जिसमें जीवन के प्रत्येक कार्य के लिए मूल्यवान प्राकृतिक निपुणता और समझ प्रदान की जाएं को ध्यान में रखा गया था। सवक्षण में पूर्व-प्राथमिक से लेकर महाविद्यालय स्तर तक की सरकारी शैक्षणिक व्यवस्थाओं को तथा शिक्षा पद्धतियों के अंतर्गत औपचारिक तथा अनौपचारिक, पूर्णकालिक एवं अंशकालिक तथा सामान्य शिक्षा के क्षेत्र में तमाम सरकारी और गैर-सरकारी क्रियाकलापों को शामिल किया गया था।

पद्धति के रूप में शिक्षा प्रशासन

सर्वेक्षेत्र के अंतर्गत यह मान कर चला गया कि शिक्षा प्रशासन एक ऐसा तंत्र हैं जिसके माध्यम से कुछ कार्य करने होते हैं और कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है। इस संदर्भ के परिपेक्ष्य में सचिवालयों, निदेशालयों, क्षेत्रीय अथवा मंडलीय (जहां जो भी होते हों) ज़िला तथा ब्लाक स्तर के संस्थानों के प्रशासनिक स्वरूप का संक्षिप्त अध्ययत किया गया। साथ ही साथ उनके नियोजन, संगठन, वित्तीयन, निदेशन, पर्यवेक्षण, निरीक्षण तथा मूल्यांकन जैसे कार्यों का भी संक्षेप में अध्ययन किया गया। प्रबंधकीय दृष्टि-कोण को व्यापक बना कर शिक्षा के लक्ष्य निर्धारित करने, समीक्षा करने तथा परिष्करण और

नवीकरण जैसे तत्वों का निश्चित अवधि तथा साधन के अंतर्गत जिस सीमा तक अध्ययन संभव था किया ।

राज्य सरकारों के साथ निकट का सहयोग

इस सर्वेक्षण की एक विलक्षण बात यह है कि प्रारंभ से ही इसकी योजना राज्य सरकारों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनिक तंत्रों के निकट सहयोग और सक्रिय सहकार से बनाई गई । मसौदे की प्रश्नावली को राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों में व्यापक रूप से प्रचालित किया गया और उनके सुझावों को ध्यान में रखकर ही इसे अन्तिम रूप दिया गया । इसी प्रकार प्रत्येक राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र पर तैयार किए गए मसौदे की रिपोर्ट राज्य सरकारों तथा संबद्ध प्रशासनों को जाँच के लिए भेजी गई और उनकी टिप्पणियों और सुझावों को ध्यान में रखकर उसे अंतिम रूप दिया गया ।

1977-78 की अवधि में हुई प्रगति

शैक्षिक सर्वेक्षण से संबंधित कार्य को 1974 के प्रारंभ में शुरू किया गया । किन्तु विधिवत भरी हुई प्रश्नावली 1975 के प्रारंभ में आनी शुरू हुई ।

प्रश्नावलियों के विश्लेषण संबंधी कार्य, मसौदे का विवरण तैयार करने एवं उसे राज्य सरकारों अथवा संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासन से जंचवाने का कार्य, राज्य सरकारों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों से प्राप्त सुझावों को ध्यान में रखकर मसौदों को अंतिम रूप देने तथा उनके प्रकाशन का कार्य साथ ही साथ होता चला गया । 1977-78 की अवधि में प्रकाशित रिपोर्टें इस प्रकार हैं :—

कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, त्रिपुरा, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल ।

प्रकाशित रिपोर्टें : अंडमान निकोबार द्वीप, आँध्रप्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, चंडीगढ़, दादरा और नगर हवेली, दिल्ली, गोआ, दमन और दियू, हरियाणा, लक्षद्वीप, हिमाचल प्रवेश, मिजोराम, पांडिचेरी, उत्तर प्रदेश तथा भारत सरकार ।

मुद्रणाधीन रिपोर्टें : असाम, बिहार, नागालैंड तथा केरल ।

इस राज्य सरकार को रिपोर्ट भेजी गई : जम्मू और काशमीर ।

इन रिपोर्टों के मसौदे तैयार किए : गुजरात, मणिपुर, मेघालय, पंजाब, राजस्थान तथा अखिल भारतीय रिपोर्ट ।

भारत में शिक्षा के लिये स्थानीय सहयोग का प्रबंधन : एक केस अध्ययन

एशिया में शिक्षा के लिये यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक, के अनुरोध पर यूनेस्को के लिये भारतीय राष्ट्रीय आयोग ने भारत में शिक्षा के लिये स्थानीय सहयोग के प्रबंधन पर स्टाफ कालिज से एक केस अध्ययन तैयार करने के लिये कहा ।

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे—उन विभिन्न रूपों की समीक्षा करना जिनसे शिक्षा के लिये स्थानीय सहयोग मिलता रहा है, ऐसे समुदाय योगदान के संग्रहण के लिये मौजूदा प्रबंधों की जाँच करना; स्थानीय और संस्थागत स्तरों पर शैक्षिक प्रशासन के लिये शिक्षा हेतु स्थानीय सहयोग के प्रबंधन में निहित नई चुनौतियों को पहचानना; आने वाली समस्याओं और उनको हल करने के लिये किये गये प्रयत्नों का विश्लेषण करना, विशेष रूप से स्थानीय सहयोग द्वारा पैदा हुये विशेष उत्तर दायित्वों के निर्वाह के लिये कार्मिकों को तैयार करने के लिये; और स्थानीय समर्थन के संग्रहण और उसके प्रभावी प्रबंध के लिये राष्ट्रीय प्रक्रिया निर्धारित करना ।

अध्ययन दो भागों में पूरा किया गया । पहले भाग में देश के विभिन्न हिस्सों में अपनाए जा रहे विभिन्न उपागमों और सामने आने वाली समस्याओं को पहचानने के लिये स्थानीय सहयोग का अखिल भारतीय सर्वेक्षण करना था । दूसरे भाग में इस क्षेत्र में अग्रणी तमिलनाडु के अनुभव के गहन अध्ययन को शामिल किया कया ।

डाक से भेजी गई प्रश्नावली के ज़रिये संक्षिप्त अखिल भारतीय सर्वेक्षण किया गया, जबकि तमिलनाडु का गहन अध्ययन अर्ध संरचित साक्षात्कार, आत्म निर्देशित प्रश्नावलियाँ और शिक्षा के लिये स्थानीय सहयोग के प्रबंधन में विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे लोगों के दृष्टिकोण को जानने के लिये मत प्रश्नावली—इन तीन प्रपत्रों द्वारा किया गया । साक्षात्कार अनुसूची आधार स्तर के अधिकारियों के लिये, प्रश्नावली मध्य स्तर प्रबंधन के लिये और मत प्रश्नावली उच्चतर स्तर प्रबंधन के लिये थी ।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों से संकेत मिला कि विद्यालय और महाविद्यालय समुदाय को जीवन में विभिन्न स्तरों पर नेतृत्व के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए । विद्यालय और समुदाय की सीमाओं को तोड़ा जाना चाहिए जिससे कि शिक्षा के लिए उपलब्ध संसाधनों में वृद्धि हो सके । अध्ययन से यह भी पता चला कि जहाँ तक सहयोग के 'स्रोतों' का संबंध है अलग-अलग सदस्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण दाता रहे थे और इस लिए उन्हें

उपयुक्त प्रोत्साहन और मान्यता देना बहुत आवश्यक था। महत्व क्रम में दूसरे स्रोत पितृ-शिक्षक संघ और स्वेच्छा संगठन थे। कृषि, कला और शिल्प, सहकारिता, स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र में स्थानीय सरकारी अधिकारियों की सहायता न्यूनतम पाई गई और यह स्थानीय अधिकारियों और शिक्षकों के समीकरण पर निर्भर थी। अध्ययन में, इसीलिए, ज़ोरदार सुझाव दिया गया कि अन्य विभागों के स्थानीय अधिकारियों को विद्यालय की सहायता करनी चाहिए। शिक्षा के लिए समुदायों का सहयोग प्रमुख रूप से विद्यालय भवनों के निर्माण के रूप में था। इस बात का भी उल्लेख किया गया कि अनौपचारिक शिक्षा ने लोगों का यथेष्ट ध्यान अपनी ओर नहीं खींचा है। सुझाव दिया गया है कि इसकी अभिज्ञता से लोगों को जागरूक करना चाहिए। जिससे कि अधिकतम जन सहयोग प्राप्त हो सके। तमिलनाडु में विद्यालयों को सहयोग देने के लिए स्थानीय तदर्थ समुदाय को बहुत उपयोगी पाया गया है।

केस अध्ययन का विवरण यूनेस्को भेज दिया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय समझ, सहयोग और शांति के लिए शिक्षा तथा मानवीय अधिकारों और मूलभूत स्वतंत्रताओं से संबंधित शिक्षा

अक्तूबर-नवम्बर, 1976 में नैरोबी में हुए यूनेस्को के 19 वें सामान्य सम्मेलन ने सिफ़ारिश की कि नवम्बर, 1974 में पैरिस में हुए उसके अठारहवें अधिवेशन में अंगीकृत अंतर्राष्ट्रीय समझ, सहयोग और शांति के लिए शिक्षा तथा मानवीय अधिकारों और मूलभूत स्वतंत्रताओं से संबंधित शिक्षा के विषय में की गई व्यापक सिफ़ारिश को लागू करने के व्यावहारिक साधनों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न शिक्षा प्रणालियों वाले सदस्य-राज्यों के एक छोटे यूनेस्को राष्ट्रीय आयोग को आमंत्रित किया जाए। इस प्रकार का अध्ययन करने वाले आयोगों में से एक भारतीय राष्ट्रीय आयोग था जिसने क्रमश: इस अध्ययन कार्य को राष्ट्रीय स्टाफ कालिज को सौंप दिया।

लक्ष्य और उद्देश्य

अध्ययन का लक्ष्य है—शैक्षणिक कार्यक्रमों के ज़रिये अंतर्राष्ट्रीय समझ, सहयोग और शाँति को बढ़ावा देने और मानवीय अधिकारों और मूलभूत स्वतंत्रताओं को सम्मान देने से संबंधित वर्तमान स्थिति का पता लगाना; विभिन्न शैक्षणिक विन्यासों में अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के घटकों को मिलाने की व्यावहारिक संभावनाओं को गहराई से परखना; अंतर्ग्रस्त समस्याओं को पहचानना और कार्यवाही के प्रकारों का सुझाव देना। इस परियोजना में शिक्षक उपक्रम और अनौपचारिक शिक्षा सहित पूर्व-प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के प्रमुख प्रकारों और स्तरों को सम्मिलित किया गया है।

क्षेत्र

भारतीय विद्यालय प्रमाण-पत्र परीक्षा परिषद और तमिलनाडु राज्य द्वारा विकसित विभिन्न विद्यालय विषयों की पाठ्य-चर्या और पाठ्य-पुस्तक का विश्लेषण; देश के विभिन्न भागों में स्थित चयनित संस्थानों से प्राप्त सूचना का संग्रहण, संकलन और विश्लेषण, यूनेस्को से संयुक्त विद्यालय परियोजना से संबंधित कुछेक संस्थाओं के केस अध्ययनों का संचालन और भारतीय लेखकों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय समझ पर लिखी गई विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों का विश्लेषण-इन सभी को अध्ययन की रूपरेखा में शामिल किया गया है।

शैक्षणिक नियोजन और प्रबंधन में पत्राचार पाठ्यक्रम

यूनेस्को शिक्षा क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक (थाईलैंड) के साहचर्य से केन्द्र में और राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों के लिए, बेहतर हो कि वे ज़िला शिक्षा अधिकारी/अनुसंधान अधिकारी से निम्न श्रेणी के न हों, स्टाफ कालिज, शैक्षणिक नियोजन और प्रबंधन में पत्राचार पाठ्यक्रम का आयोजन करने की योजना बना रहा है। शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों को अपने कार्य से हटाए बगैर उनकी योग्यता का विकास करने की जरूरतों को ध्यान में रखकर इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाई गई है।

उद्देश्य

पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य ये होंगे :-

(क) भारत में उत्तर-स्वतंत्रता अवधि में शिक्षा के क्षेत्र में हुए विकास से भाग लेने वालों को अवगत कराना;

(ख) सामान्य रूप से शिक्षा के क्षेत्र में और विशेष रूप से शिक्षा आयोजना और प्रबंधन के क्षेत्र में उत्पन्न नवीनतम प्रवृत्तियों से भाग लेने वालों को परिचित कराना;

(ग) शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों के रूप में अपनी तकनीकी सामर्थ्य और प्रभाविता में सुधार करने के लिए भाग लेने वालों में अपेक्षित अभिवृत्तियों, कौशलों और ज्ञान का विकास करना; और

(घ) अपनी जारी व्यावसायिक संवृद्धि के उद्देश्य से भाग लेने वालों को स्वाध्याय की प्रक्रिया से परिचित कराना।

पाठ्य विषय

पाठ्यक्रम में निम्न प्रमुख क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है ;

(I) भारत में शिक्षा आयोजना और प्रशासन का पुनर्विलोकन;

अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों के साथ सहयोग

मि० लिम तेह इंग, संघीय विद्यालय निरीक्षक, शिक्षा मंत्रालय, क्वालालंपुर, मलेशिया, जो एशिया में शिक्षा के लिए यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक द्वारा आयोजित किए गए थे, 13-11-1977 को राष्ट्रीय स्टाफ कालिज आए। उन्होंने कालिज के कार्यक्रमों के संबंध में निदेशक और संकाय के साथ विचार-विमर्श किया और विद्यालयों के पर्यवेक्षण और निरीक्षण के संबंध में अनुभवों का आदान-प्रदान किया।

महाविद्यालय और विश्वविद्यालय योजना के शैक्षणिक केन्द्र, बाल्टीमोर, मेरी लैंड के निदेशक डा० सतीश बी० पारेख ने 3-12-1977 को राष्ट्रीय स्टाफ कालिज का दौरा किया। उन्होंने कालिज के कुछेक आगामी कार्यक्रमों में अपने सहयोग की संभावनाओं के संबंध में निदेशक और संकाय के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया।

सोवियत रूस की उच्चत्तर और विशिष्ट माध्यमिक शिक्षा उप मंत्री प्रो० एन०एस० इगोखे के नेतृत्व में एक पांच सदस्यीय शिष्ट-मंडल ने 30 जनवरी, 1978 को स्टाफ कालिज का दौरा किया। वे स्टाफ कालिज के निदेशक और संकाय के सदस्यों से मिले। प्रमुख रूप से शिक्षा आयोजना और प्रशासन से संबंधित पारस्परिक हित की समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया। स्टाफ कालिज द्वारा हाथ लिये गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और अनुसंधान परियोजनाओं को सोवियत शिष्ट-मंडल के सम्मुख स्पष्ट किया गया। उन लोगों ने स्टाफ कालिज के कार्य में अत्यधिक दिलचस्पी ली और इसी प्रकार के कार्य को अपने देश में शुरू करने की इच्छा व्यक्त की।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन और ब्रिटिश परिषद के सहयोग में 20 से 25 फ़रवरी, 1978 तक स्टाफ कालिज द्वारा आयोजित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए शैक्षिक संसाधनों के प्रबंधन में किये गये अभिविन्यास कार्यक्रम में शौरसिच विद्यालय, फाल्किर्क मार्ग, लंदन के प्रधानाचार्य श्री पी० एस० वाट्स और थेम्स बहुउद्देशीय डार्फोर्ड शिक्षा महाविद्यालय ओकफील्ड पथ, डार्टफोर्ट केन्ट के श्री सी० जे० सी० बोल्टन ने ज्ञानसाधन व्यक्तियों के रूप में कार्य किया।

शिक्षा संस्थान, लंदन के डा० पीटर विलियम्स ने 17-3-1978 को स्टाफ कालिज का दौरा किया और निदेशक तथा संकाय के सदस्यों के साथ बैठक में भाग लिया।

शिक्षा सेवाएं, ब्रेंडफोर्ड नगरपालिका प्रांत, इंगलैंड के निदेशक श्री डब्ल्यू० आर० नाइट ने 17-3-1978 को स्टाफ कालिज का दौरा किया और कई विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए निदेशक और संकाय के सदस्यों के साथ बैठक में भाग लिया।

(II) शिक्षा आयोजना के सिद्धांत और तकनीकें;

(III) शिक्षा आयोजना के लिए आवश्यक आंकड़े;

(IV) शिक्षा का अर्थशास्त्र; और

(V) शिक्षा प्रशासन में लागू होने के विशेष संदर्भ में आधुनिक प्रबंधन के बुनियादी सिद्धांत और तकनीकें।

पुस्तकालय तथा प्रलेखीकरण संबंधी सेवाएं

राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के पुस्तकाल में शिक्षा आयोजना एवं प्रशासन तथा इससे सम्बद्ध विषयों पर पुस्तकों का पर्याप्त भंडार है। पुस्तकालय के पास लगभग 1700 पुस्तकें तथा अन्य प्रकाशन हैं, इसके पास संयुक्त राष्ट्र संघ, यूनेस्को, आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओ. ई. सी. डी.), आई एल ओ तथा यूनिसेफ जैसे अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों तथा सम्मेलनों की रिपोर्टों का प्रचुर मात्रा में संग्रह है। इनका विषय शिक्षा दर्शन, शिक्षा समाजविज्ञान तथा शैक्षणिक नवीकरण आदि है। इस समय पुस्तकालय शिक्षा आयोजना तथा प्रशासन से संबंधित राज्यों की रिपोर्टों तथा अन्य प्रलेखों को देश की विभिन्न सरकारों तथा संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों से मंगाकर एकत्र करने के काम में लगा है।

पुस्तकालय शिक्षा आयोजना, प्रशासन, प्रबंध एवं विकास तथा इससे संबद्ध विषयों की लगभग 150 पत्रिकाएं अपने यहां मंगाता है। इन पत्रिकाओं में निकलने वाले महत्व-पूर्ण लेखों की अनुक्रमणिका भी तैयार कर ली जाती है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले व्यक्तियों को पुस्तकालय का सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यहां तक कि छोटी अवधि के अभिविन्यास कार्यक्रमों में भी एक सत्र को पुस्तकालय के लिए सुरक्षित कर दिया जाता है ताकि भाग लेने वालों को शिक्षा आयोजना, प्रशासन एवं प्रबंध के क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध सामग्री से परिचित कराया जा सके। पुस्तकालय अपने यहां उपलब्ध नवीनतम संस्करणों की त्रैमासिक सूची भी निकालता है।

विचाराधीन अवधि में लगभग एक हज़ार पुस्तकें तथा प्रलेख पुस्तकालय में जुटाए गए।

प्रकाशन

स्टाफ कालिज जितने भी प्रशिक्षण कार्यक्रमों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों का आयोजन करता है उनकी रिपोर्ट (प्रायः अनुलेख रूप में) प्रकाशित करता है। विचाराधीन अवधि में निम्नलिखित रिपोर्टें प्रकाशित की गई :

1. (संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले) महाविद्यालय प्रधानाचार्यों के विशिष्ट दल के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अप्रैल 5-7, 1977)*।

2. राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रधान कार्मिकों के लिए द्वितीय अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अप्रैल 11-14, 1977)*।

3. उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों के लिए क्षेत्रीय शिक्षा आयोजना में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का विवरण (मई 5-14,1977)*।

4. तमिलनाडु के शिक्षा अधिकारियों के लिए शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (मई 23-28, 1977)*।

5. सिक्किम के विद्यालय प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के लिए शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (जून-2-14, 1977)*।

6. संयुक्त राज्य अमरीका से आये सामाजिक अध्ययन पर्यवेक्षकों और पाठ्यचर्या निदेशकों के लिये भारतीय इतिहास और संस्कृति में कर्मशाला का विवरण (जून 21-जुलाई 14, 1977)*।

7. राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रधान कार्मिकों के लिये तृतीय अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (जुलाई 25-28, 1977) *।

8. राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रधान कार्मिकों के लिये चतुर्थ अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अगस्त 22-25, 1977)*।

---

* अनुलेख रूप में।

9. भारत में विश्वविद्यालयों के वित्त अधिकारियों के लिए वित्त प्रबंधन में तृतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (अगस्त 29-सितम्बर 9, 1977)*।

10. राज्य शिक्षा आयोजना अधिकारियों के लिए प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (सितम्बर 12-24, 1977)*।

11. मध्य प्रदेश के प्रथम श्रेणी के शिक्षा अधिकारियों के लिये शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अक्तूबर 3-13, 1977)*।

12. अंडमान निकोबार द्वीप समूह के विद्यालय प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के लिये शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अक्तूबर 26-नवम्बर 7, 1977)*।

13. अरुणाचल प्रदेश के विद्यालय प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के लिये शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (दिसंबर 15-24, 1977)*।

14. तमिलनाडु के महाविद्यालयों के प्राचार्यों के लिये अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (दिसंबर 26-31, 1977)*।

15. बर्मा और अफ़गानिस्तान के शिक्षा अधिकारियों के लिये अध्ययन-व-प्रेक्षण कार्यक्रम का विवरण (जनवरी 2-14, 1978)*।

16. राज्य शिक्षा अधिकारियों के लिये द्वितीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (जनवरी 16-25, 1978)*।

17. राज्य शिक्षा अधिकारियों के लिये तृतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (फरवरी 6-15, 1978)*।

18. उच्चतर माध्यमिक विद्यालव के प्रधानाचार्यों के लिए शिक्षा अनुसंधान के प्रबंधन में अभिविन्यास का विवरण (फरवरी 20-25, 1978)*।

19. (संयुक्त राज्य अमरीका जाने वाले) महाविद्यालय प्रधानाचार्यों के विशिष्ट दल के लिये द्वितीय अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (मार्च 20-22, 1978)*।

---

* अनुलेख के रूप में।

20. "ग्रामीण विकास के लिये शिक्षा"—ग्रामीण विकास के लिये शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी/सम्मेलन का विवरण (दिसंबर 15-23, 1976)।

21. जिला शिक्षा अधिकारियों के अखिल भारतीय सम्मेलन का पूर्ण विवरण (मार्च 6-8, 1976)।

22. शिक्षा प्रशासन पर तृतीय अखिल भारतीय सम्मेलन के विवरण :—

— कर्नाटक

— मध्य प्रदेश

— महाराष्ट्र

— उड़ीसा

— तमिलनाडु

— त्रिपुरा और

— पश्चिमी बंगाल।

अभिस्वीकृति

केन्द्रीय शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय, योजना आयोग, राष्ट्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, एशिया में शिक्षा से स यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक ने जो सहायता और सहयोग प्रदान किया, कालिज, उसके लिये अत्यंत आभारी है। वह अपने क्षेत्र के उन विशेषज्ञों का जि अतिथि वक्ता या स्रोता के रूप में कार्य किया तथा उन कार्मिकों के भी प्रति जिन विचाराधीन अवधि में विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन एवं संचालन के कार्य में सहाय और सहयोग प्रदान किया, आभार व्यक्त करता है।

परिशिष्ट-1

राष्ट्रीय स्टाफ कालिज परिषद के सदस्यों की सूची

1.	डा. प्रताप चंद्र चंद्र, केन्द्रीय शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री, नई दिल्ली ।	अध्यक्ष
2.	प्रोफेसर सतीश चंद्र, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ।	सदस्य
3.	श्री काली चरन, शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश ।	सदस्य
4.	श्री नवलभाई एन. शाह, शिक्षा मंत्री, गुजरात ।	सदस्य
5.	श्री यू. ए. बीरन, शिक्षा मंत्री, केरल ।	सदस्य
6.	श्री ठाकुर प्रसाद सिंह, शिक्षा मंत्री, बिहार ।	सदस्य
7.	श्री हीरानंद, शिक्षा मंत्री, हरियाणा, चंडीगढ़ ।	सदस्य

8. श्री पी. सब्नायगम, सदस्य
सचिव, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

9. सचिव, भारत सरकार, सदस्य
वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली,
(या उनका प्रतिनिधि)

10. सचिव, भारत सरकार, सदस्य
गृह मंत्रालय, नई दिल्ली,
(या उनका प्रतिनिधि)

11. सचिव, योजना आयोग, सदस्य
नई दिल्ली,
(या उनका प्रतिबिधि)

12. डा. एस. के. मित्रा, सदस्य
निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

13. श्री अशोक बाजपेयी, सदस्य
जन शिक्षा निदेशक,
मध्य प्रदेश,
भोपाल ।

14. श्री डी. एम. सुखथांकर, सदस्य
शिक्षा सचिव,
महाराष्ट्र सरकार,
बंबई ।

15. श्री सी. जी. रंगभाष्यम, सदस्य
आयुक्त और सचिव,
शिक्षा विभाग,
तमिलनाडु सरकार,
मद्रास ।

16. श्री पी. सी. बनर्जी, सदस्य
आयुक्त और सचिव,
शिक्षा विभाग,
पश्चिमी बंगाल,
कलकत्ता ।

17. श्री सेवा सिंह, सदस्य
जन शिक्षा निदेशक,
शिक्षा विभाग,
पंजाब,
चंडीगढ़ ।

18. डा. मालकाम एस. आदिशेशैया, सदस्य
कुलपति,
मद्रास विश्वविद्यालय,
मद्रास ।

19. डा. आबाद अहमद, सदस्य
प्रोफेसर,
प्रबंध अध्ययन संकाय,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

20. प्रोफेसर एम. वी. माथुर, सदस्य-सचिव
निदेशक,
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज,
नई दिल्ली ।

राष्ट्रीय स्टाफ कालिज की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची

1. डा. प्रताप चंद्र चंद्र, — अध्यक्ष
   केन्द्रीय शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री,
   नई दिल्ली ।

2. श्री हीरा नंद, — सदस्य
   शिक्षा मंत्री,
   हरियाणा सरकार,
   हरियाणा सरकार,
   चंडीगढ़ ।

3. श्री पी. सब्नायगम, — सदस्य
   सचिव,
   शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय,
   नई दिल्ली ।

4. प्रो. सतीश चंद्र, — सदस्य
   अध्यक्ष,
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
   नई दिल्ली ।

5. डा. मालकाम एस. आदिशेशैया, — सदस्य
   कुलपति,
   मद्रास विश्वविद्यालय,
   मद्रास ।

6. सचिव, भारत सरकार, — सदस्य
   वित्त मंत्रालय,
   नई दिल्ली ।
   (या उनका प्रतिनिधि)

7.	श्री डी. एम. सुखथांकर, शिक्षा सचिव, महाराष्ट्र सरकार, बंबई ।	सदस्य
8.	प्रो. एम. वी. माथुर, निदेशक, राष्ट्रीय स्टाफ कालिज, नई दिल्ली ।	सदस्य-सचिव

परिशिष्ट III

शैक्षणिक आयोजनाकारों और प्रबन्धकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालिज, नई दिल्ली के वर्ष 1977-78 के लेखाओं का लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

1. सामान्य

शैक्षणिक आयोजनाकारों और प्रबन्धकों का राष्ट्रीय स्टाफ कालिज सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम्, 1860 के अंतर्गत रजिस्ट्रीकृत सोसाइटी के रुप में दिसम्बर 1970 में स्थापित किया गया था। स्टाफ कालिज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक आयोजनाकारों और प्रबन्धकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना और शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षणिक आयोजना और प्रबन्ध के क्षेत्र में अनुसंधान करना था।

2. देयताओं का विवरण

सोसाइटी की नियमावली, अर्थात शैक्षणिक आयोजनाकारों और प्रबन्धकों का राष्ट्रीय स्टाफ कालिज नियमावली, 1970 के नियम 37 (क) के अनुसार भारत सरकार द्वारा विहित कार्यों के वार्षिक लेखे तैयार किए जाने होते हैं। इन के अंतर्गत प्राप्ति और अदायगी लेखे व देयताओं का विवरण आते हैं। 1970-71 से 1976-77 तक के वर्षों के लेखाओं के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में की गई टिप्पणियों के बावजूद स्टाफ कालिज द्वारा देयताओं का विवरण तैयार नहीं किया गया है। स्टाफ कालिज ने बताया (जुलाई 1978) कि देयताओं का विवरण उस समय तैयार किया जायगा जब विवरण का फार्म जो भारत सरकार के विचाराधीन है विहित किया जायगा।

नई दिल्ली,
दिनाँक : 6 दिसम्बर 1978

हस्ता/-
(किशोरी चरण दास)
महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व

लेखापरीक्षा प्रमाण पत्र

मैंने शैक्षणिक आयोजनाकारों और प्रबन्धकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालिज, नई दिल्ली के वर्ष 1977-78 के पूर्ववर्ती लेखाओं की जांच कर ली हैं और मैने सभी अपेक्षित सूचना और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं तथा संलग्न लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में दी गई अभ्युक्तियों के अधीन रहते हुए अपनी लेखापरीक्षा के परिणाम स्वरुप मैं प्रमाणित करता हूं कि मेरी राय में और मेरी सर्वोत्तम सूचना और मुझे दिए गए स्पष्टीकरणों तथा स्टाफ कालिज की बहियों में किए गए उल्लेख के अनुसार ये लेखे उपयुक्त रूप से तैयार किए गए हैं और ये स्टाफ कालिज के कार्यकलाप का सही और उचित रुप प्रस्तुत करते हैं।

नई दिल्ली,
दिनांक : 6 दिसम्बर 1978

हस्ता/-
किशोरी चरण दास
महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व

31-3-1978 के इति शेष का ब्योरा

मद का नाम	कुल प्राप्तियां	भुगतान	शेष
योजनेतर	2,91,000.00	2,47,205.30	43,794.70
योजना ग्रथ शेष	38,306 00	13,27,505.38	
प्राप्त ग्रनुदान	14,27,509.59	+ 53.25	
	14,65,815.59	13,27,558.63	1,38,256.96
यूनेस्को कूपनों से			
ग्रथ शेष	4,049.57		
वर्ष में खरीद	8,800.00		
	12,849.57	12,537.62	*311.95
जिला शिक्षा ग्रधिकारियों का सम्मेलन शेष बी/एफ	39,779.66	1,632.57	38,147.09
सर्वेक्षण ग्रथ शेष	41,930 86		
वर्ष में प्राप्तियाँ	470.33		
वर्ष में ग्रनुदान	62,000.00		
	1,04,401.19	1,05,145.14 (—)	743.95
यूनेस्को			
ग्रंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम	—	2,188.55 (—)	2,188.55
ग्राम विकास	3,508.77	3,763.10 (—)	254.33
परियोजना (प्राप्त)	20.00	19,786.30 (—)	19,766.30
शैक्षिक प्रशिक्षण ग्रायोजना तथा प्रशासन	4,854.36	—	4,854.36
	8,383.13		
प्राप्त ग्रतिरिक्त मंहगाई भत्ता (ग्रनिवार्य जमा योजना)	26,369.61	25,565.58	** 804.03

* यह यूनेस्को कूपनों के मूल्य का रुपयों से प्रतिनिधित्व करता है ।

** यह क्षेत्रीय भविष्य निधि ग्रायुक्त द्वारा गलत ग्रदायगी का प्रतिनिधित्व करता है जिसे वापस करना है ।

वर्ष वर्ष के दौरान आवर्तियां (फुटकर)	34,439.50		
स्थास्थायी पेशगी	500.00		
वसूवसूली योग्य पेशगी	5,650.00	—	40,589.50
	40,589.50		2,66,758.59
		(—)	22,953.13
			2,43,805.46

हस्ताक्षर/-

एल० के० राठौड़
रजिस्ट्रार
शिशिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज,
नई दिल्ली

हस्ताक्षर/-

डी० पी० नायर
कार्यकारी निदेशक
शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज,
नई दिल्ली

शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का राष्ट्रीय स्टाफ कालिज, नई दिल्ली

1-4-1977 से 31-3-1978 तक की अवधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा

प्राप्तियां	रुपए	रुपए	भुगतान	रुपए	रुपए
अथशेष			**गैर-योजना (स्थापना व्यय)**		
सरकारी अनुदानों से	58,033.27		स्टाफ को वेतन और भत्ते	2,06,688.30	
440.17 डालर मूल्य की यूनेस्को कूपनों से	4,049.57		पेन्शन और उपदान	1,950.00	
जि. शि. अ. के सम्मेलन के लिए मंत्रालय के अनुदान से	39,779.66		भविष्य निधि योगदान	25,000.00	
तृतीय अखिल भारतीय शिक्षा सर्वेक्षण के लिए एन, सी. ई. आर. टी. अनुदानों से	41,930.86		चिकित्सा प्रतिपूर्ति	10,000.00	
ग्रामीण विकास के लिए शिक्षा हेतु यूनेस्को अनुदानों से (—)	19,727.27	1,24,066.09	समयोपरि भत्ता	3,567.00	2,47,205.30
भारत सरकार से अनुरक्षण अनुदान			**योजना**		
गैर-योजना	2,91,000.00		कार्यक्रम (सीधे खर्च)		1,00,868.38
योजना	14,27,509 59	17,18,509.59	**स्थापना खर्च**		
			स्टाफ को वेतन और भत्ते	3,52,309.67	
			स्टाफ को छुट्टी यात्रा रियायत	2,440.22	
			के. स. स्वा. यो. योगदान	1,019.50	
			स्टाफ को चिकित्सा प्रतिपूर्ति	14,685.81	
			स्टाफ को समयोपरि भत्ता	10,000.00	

प्राप्तियां	रुपए	रुपए
स्थायी अग्रिम		500.00
विविध प्राप्तियां		
हास्टेल किराया	11,541.00	
प्रकाशन	17,033.67	
पुस्तकालय किताबें (रद्दी की बिक्री)	2,422.55	
साजसज्जा और सजावट	69.00	
कार्यालय उपस्कर और बिजली उपस्कर	292.08	
टेलीफोन व्यय भार	2 .50	
स्टाफ के सदस्यों को यात्रा/दैनिक भत्ता	185.00	
वेतन और भत्ते (योजना)	2,649.20	
के.ए.स्वा.यो. योगदान	224.50	34,439.50
1000 डालर मूल्य के यूनेस्को पुस्तक कूपनों की खरीद		8,800.00

भुगतान	रुपए	रुपए
स्टाफ का यात्रा । दैनिक भत्ता	19,008.35	
भविष्य निधि योगदान	21,998.00	
छुट्टी वेतन और पेंशन योगदान	13,034.05	4,34,495.60
अन्य खर्च		
प्रकाशन	71,222.79	
पुस्तकालय		
किताबों की खरीद	45,958.94	
यूनेस्को कूपनों की खरीद	8,800.00	
यूनेस्को कूपनों से किताबों की खरीद	12,537.62*	
अन्य आकस्मिक व्यय	6,816.30	
साज-सज्जा मरम्मत	541.61	
साज-सज्जा और सजावट	44,684.13	
बिजली और पानी के खर्च	10,172.00	
सत्कार खर्चे	406.45	
बीमा	1,622.74	
गर्म और ठंडे पानी के खर्चे	286.20	
वर्दी	2,906.00	
डाक और तार के खर्च	7,380.45	

प्राप्तियां			भुगतान		
	रुपए	रुपए		रुपए	रुपए
वसूली योग्य अग्रिम			कार्यालय उपस्कर और बिजली उपस्कर	392.75	
सवारी भत्ता	2,710.00		दरें और कर	61,539.70	
त्यौहार भत्ता	2,940.00	5,650.00	टेलीफोन के खर्च	18,640.05	
अतिरिक्त म. म. की अ. ज. यो.		26,369.61	आफिस मशीन की मरम्मत	4,077.69	
सौंपे गए कार्यक्रम			स्टाफ कार अनुरक्षण	14,871.61	
तृतीय अखिल भारतीय शिक्षा सर्वेक्षण के लिए एन. सी. ई. आर. टी. अनुदान	62,000.00		स्टाफकार में पेट्रोल और तेल खर्चे	22,667.38	
			लेखन सामग्री	78,466.98	4,01,453.77
एफ. डी. आर. पर ब्याज से प्राप्ति	470.33	62,470.33			12,537.62*
यूनेस्को कार्यक्रम			**जमा कार्य**		
ग्रामीण विकास के लिए शिक्षा	3,508.77		के. लो. नि. वि. के पास जमा कार्य हेतु अग्रिम		3,84,162.63
अंतर्राष्ट्रीय समझ, सहयोग और शांति के लिए शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम परियोजना अनुदान	—		**वसूली योग्य अग्रिम**		
			सवारी भत्ता	2,825.00	
प्राप्ति	20.00		त्यौहार भत्ता	3,700.00	6,525.00
			अतिरिक्त अ. ज. यो. के. महंगाई भत्ता का भुगतान		25,565.58
			सौंपे गए कार्यक्रम		
			शिक्षा मंत्रालय जि. शि. अ. का सम्मेलन		1,632.57

प्राप्तियां	रुपए	रुपए	भुगतान	रुपए	रुपए
दूरस्थ अध्यापन तकनीकों के जरिये शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का प्रशिक्षण	4,854.36	8,383.13	एन. सी. ई. आर. टी., तृतीय अखिल भारतीय शिक्षा सर्वेक्षण		
			(क) स्टाफ को वेतन और भत्ते	1,04,663.24	
			(ख) अन्य व्यय	481.90	1,05,145.14
भेजी गई रकम			**यूनेस्को कार्यक्रम**		
आय कर		24,559.00	ग्रामीण विकास के लिए शिक्षा	3,763.10	
सा. भ. नि./अश. भ. नि.		90,809.00	अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम	2,188.55	
गृह निर्माण अग्रिम		13,270.00	अंतर्राष्ट्रीय समझ, सहयोग और शांति के लिए शिक्षा परियोजना	19,786.30	
भवन किराया		84.55	दूरस्थ अध्यापन तकनीकों के जरिये शिक्षा आयोजना और प्रशासन का प्रशिक्षण	—	25,737.95
पी. आ. एस. एस./सी.टी.डी.		5,620.00	**भेजी गई रकमें**		
			आयकर		24,559.00
			सा. भ. नि. । अंश. भ. नि.		90,809.00
			गृह निर्माण अग्रिम		13,270.00
			पी. आर. एस. एस. और सी. टी. डी.		5,620.00
			मकान किराया		137.80
			एल.आई.सी./सी. जी. ई. आई.एस.		1,411.45

प्राप्तियां			भुगतान		
	रुपए	रुपए		रुपए	रुपए
एल.आई.सी./सी.जी.ई.आई.एस.		1,411.45	अंतशेष्य		2,43,805.46
	योग रु.	21,24,942.25		योग :—	21,24,942.25

प्रमाणित किया जाता है कि भारत सरकार द्वारा दिए गए अनुरक्षण अनुदानों का उपयोग उसी उद्देश्य के लिए किया गया है जिसके लिए वे अनुदान स्वीकृत किए गए थे और उससे संबद्ध शर्तों का पूरी तरह पालन किया गया है।

ह०/-
एल. के राठौड़
रजिस्ट्रार
शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज,
नई दिल्ली।

ह०/-
डी.पी. नायर
कार्यकारी निदेशक,
शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज,
नई दिल्ली।

1977 से 1978 तक की अवधि में जिला शिक्षा अधिकारियों के सम्मेलन को संचालित करने के लिए शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा प्राप्त अनुदान के लिए प्रपत्र लेखा ।

प्राप्तियां		भुगतान	
अथशेष	39,779.66	सम्मेलन से संबंधित खर्चे	1,632.57
प्रदत्त सहायता अनुदान	—	इतिशेष	38,147.09
कुल जोड़	39,779.66	कुल जोड़	39,779.66

प्रमाणित किया जाता है कि शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त सहायता अनुदान राशि उन्हीं कार्यों के लिए इस्तेमाल की गई है जिसके लिए यह राशि मंजूर की गई थी ।

ह०/-
एल० के० राठौर
रजिस्ट्रार
शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज,
नई दिल्ली

ह०/-
डी० पी० नैय्यर
कार्यकारी निदेशक
शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज
नई दिल्ली

वर्ष 1977-78 की अवधि में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली द्वारा तीसरे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के लिए प्राप्त अनुदान के लिए प्रपत्र लेखा ।

प्राप्तियां		भुगतान	
अथ शेष	41,930.86	कर्मचारियों को वेतन तथा भत्ता	1,04,663.24
प्रदत्त सहायता अनुदान	62,000.00	अन्य खर्च	481.90
प्राप्तियाँ (फुटकर)	470.33	इति शेष	
जोड़	1,04,401.19	जोड़	*1,05,145.14

*ऊपर निर्धारित कार्यक्रम पर 743.95 रुपयों की राशि की अधिक अदायगी की गई जिसको वर्ष 1977-1978 की अवधि में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत राष्ट्रीय स्टाफ कालिज को दी जाने वाली सहायता अनुदान से वापस ले लिया गया ।

प्रमाणित किया जाता है कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रदत्त सहायता अनुदान राशि उन्हीं कार्यों के लिए इस्तेमाल की गई है जिसके लिए यह राशि मंजूर की गई थी ।

ह०/-
एल० के० राठौड़
रजिस्ट्रार,
शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज,
नई दिल्ली

ह०/-
डी० पी० नैय्यर,
कार्यकारी निदेशक
शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज,
नई दिल्ली

वर्ष 1977-78 की अवधि में शैक्षिक कार्यक्रमों को संचालित करने के लिए यूनेस्को द्वारा प्राप्त अनुदान के लिए प्रपत्र-लेखा ।

प्राप्तियाँ		भुगतान	
अथ शेष			
ग्राम विकास की शिक्षा के लिए अनुदान	3,508.77	ग्राम विकास के लिए शिक्षा	3,763.10
अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के लिए अनुदान	—	अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम	2,188.55
अंतर्राष्ट्रीय उपक्रम सहयोग और शाँति के लिए शिक्षा परियोजना के लिए अनुदान	—	अंतर्राष्ट्रीय समझ, सहयोग और शांति के लिए शिक्षा परियोजना	19,786.30
(ख) प्राप्तियां फुटकर	20.00		
दूरस्थ अध्यापन तकनीक द्वारा शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों के प्रशिक्षण के लिए अनुदान	4,854.36	दूरस्थ अध्ययन तकनीकों द्वारा शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का प्रशिक्षण	—
योग	8,383.13	योग	25,737.95

प्रदा सहायता अनुदान की आवतियां रुकी रहने के कारण उपरोक्त कार्यक्रम पर 254.33+2, 188.55+19,766.30 रुपये की राशि का अधिक भुगतान हुआ है। अतिरिक्त रशि भारत सरकार द्वारा दी गई सहायता अनुदान से ली गई है।

प्रमाणित किया जाता है कि यूनेस्को द्वारा प्रदत सहायता अनुदान राशि उन्हीं कार्यों के लिए इस्तेमाल की गई है जिसके लिए यह राशि मंजूर की गई थी ।

ह०/-
एल० के० राठौड़
रजिस्ट्रार
शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
रास्ट्रीय स्टाफ कालिज
नई दिल्ली

ह०/-
डी० पी० नैय्यर
कार्यकारी निदेशक
शिक्षा आयोजकों और प्रशासकों का
राष्ट्रीय स्टाफ कालिज
नई दिल्ली

———

संकाय के सदस्य
(31-3-1978)

निदेशक	—	प्रोफेसर एम. वी. माथुर
परामर्शदाता	—	श्री डी. पी. नैय्यर
अध्येता	—	(1) श्री सी. एल. सपरा
	—	(2) डा. आर. एन. चौधरी
	—	(3) डा. एन. एम. भागिया
सह-अध्येता	—	श्री के. जी. विरमानी
अनुसंधान प्रशिक्षण सहयोगी	—	(1) श्री एस. एस. दुदानी
	—	(2) श्री टी. के. डी. नायर
	—	(3) डा. आर. एस. शर्मा
	—	(4) श्री सी. मेहता
	—	(5) डा. ए. के गोपाल
कुल-सचिव	—	श्री एल. के. राठौड़
पुस्तकाध्यक्ष	—	कु. निर्मल मल्होत्रा

स्टाफ में परिवर्तन

डा. आर. एन. चौधरी, पदमुक्त कालिज शिक्षा निदेशक, राजस्थान सरकार, जयपुर 1-4-1977 को अध्येता के पद पर नियुक्त हुए।

कु. निर्मल मल्होत्रा, पुष्तकाध्यक्ष श्रेणी 11, संस्कृति विभाग (केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय सेवा) प्रतिनियुक्ति पर 7-4-1977 को पुस्तकाध्यक्ष श्रेणी-1 के पद पर नियुक्ति हुई।

डा. टी के जैन 16-4-1977 को अनुसंधान/प्रशिक्षण सहयोगी के पद पर नियुक्त हुए और दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त होने के लिए 1-12-1977 को पद मुक्त हुए।

श्री के. जी. विरमानी, वैज्ञानिक अधिकारी (मनोविज्ञान). अनुसंधान अभिकल्प और मानक संगठन, रेल मंत्रालय, लखनऊ प्रतिनियुक्ति पर 13-5-1977 को सह-अध्येता के पद पर नियुक्त हुए।

डा. आर. एस. शर्मा, विशेषज्ञ, राज्य शिक्षा संस्थान, हरियाणा, गुड़गांव प्रतिनियुक्ति पर 8-6-1977 को अनुसंधान प्रशिक्षण सहयोगी के पद पर नियुक्त हुए।

श्री चिरंजीव मेहता 5-8-1977 को अनुसंधान/प्रशिक्षण सहयोगी के पद पर नियुक्त हुए।

श्री एन. रामचंद्रन, कुल सचिव अपने मूल कार्यालय (भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली) में नियुक्त होने के लिए 17-10-1977 को पदमुक्त हुए।

श्री एल. के. राठौड़, उप सचिव, वित्त मंत्रालय (व्यय विभाग), नई दिल्ली प्रतिनियुक्ति पर 17-10-1977 को कुल-सचिव के पद पर नियुक्त हुए।

डा. निर्मल एम. भागिया, रीडर, शिक्षा विभाग, इंदौर विश्वविद्यालय, 15-11-1977 को अध्येता के पद पर नियुक्त हुए।

डा. अरुण कुमार गोपाल, अनुसंधान सहायक, भारतीय जन सहयोग एवं बालविकास संस्थान, नई दिल्ली प्रतिनियुक्ति पर 25-2-1978 को अनुसंधान/प्रशिक्षण सहयोगी के पद पर नियुक्त हुए।

परिशिष्ट-VI

एशिया संस्थाना स्टाफ कालिज के प्रकाशनों की अद्यतन सूची

एशिया संस्थान द्वारा प्रकाशित सामग्री

1. जिले में शिक्षा नियोजन—डा. जे. पी. नायक (1969)
2. संस्थागत नियोजन—डा. जे. पी. नायक (1969)
3. विद्यालय सुधार परियोजनाएं एवं सामुदायिक सहायता—श्री एन. डी. सुंदरखाडिवेलु (1969)
4. ज़िला स्तर पर अल्पव्यय साध्य शैक्षणिक सुधार के कार्यक्रम—श्री एम.वी. राजगोपाल (1969)
5. शैक्षणिक नियोजन में आधुनिक प्रवृतियां—श्री सी.बी. पद्मनाभन (1969)*
6. भारत में शैक्षणिक नियोजन के प्रशासनिक पक्ष पर कुछ विचार—श्री वेद प्रकाश (1969)*
7. शैक्षणिक नियोजन कार्मिकों के प्रशिक्षण पर कुछ अभिमत—श्री वेद प्रकाश (1969)*
8. ज़िला शिक्षा अधिकारियों की भूमिका, कार्य, भर्ती और प्रशिक्षण पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का विवरण (1970)
9. जीवनपर्यन्त शिक्षा—जीवन पर्यन्त समाकलित शिक्षा पर हुई विशेषज्ञों की बैठक का विवरण (1970)
10. एशियाई क्षेत्र में शैक्षणिक नियोजन संबंधी कुछ चुने हुए आँकड़े (1970)*।

---

*अनुलेख रूप में।

11. शैक्षणिक नियोजन लागू करने के सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलू—प्रो, एम. वी. माथुर (1970)।

12.-14. शैक्षणिक नियोजन एवं प्रशासन पर आयोजित राज्य संगोष्ठियों के विवरण :

—गुजरात

—मैसूर

—उड़ीसा

15. शिक्षा के लिए साधन जुटाने से संबंधित अध्ययन-दल का विवरण, 1971

16. शैक्षणिक प्रशासन में आधुनिक प्रबंध प्रविधियाँ (1971)।

17. शिक्षा संबंधी आंकड़ों पर आयोजित क्षेत्रीय प्रशिक्षण संगोष्ठी का विवारण (1971)*।

18. गुरुडालेन्ड नियोजन अभ्यास (खंड (1, 2) (1971)*।

19. शैक्षणिक नियोजन एवं प्रबंध—शैक्षणिक नियोजन एवं प्रबंध पर आयोजित उच्चस्तरीय प्रशिक्षण संगोष्ठी का विवरण (1973)*।

राष्ट्रीय स्टाफ कालिज के प्रकाशन

1. ज़िला शिक्षा अधिकारियों के प्रशिक्षण से संबद्ध अध्ययन दल का विवारण (1972)।

2. भारत में शैक्षणिक नवाचार—कुछ प्रयोग (1974)।

3. पांचवीं पंचवर्षीय योजना के विशेष संदर्भ में भारतीय शिक्षा की प्रशासन एवं वित्त व्यवस्था (1974)*।

4-14. नियोजन एवं प्रशासन पर आयोजित राज्य संगोष्ठियों के विवरण—

—आँध्र प्रदेश

—बिहार

---

* अनुलेख के रूप में।

—हरियाणा

—जम्मू-कश्मीर

— केरल

—नागालैंड

—पंजाब

—राजस्थान

—उत्तर प्रदेश

—तमिलनाडु

—पश्चिमी बंगाल (1969-71)

15. एशिया संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समीक्षा (1962-72) (1974)*।

16. शिक्षितों की बढ़ती हुई संख्या और शैक्षिक अवसरों की खोज-जनसंख्या गति की ओर शिक्षा पर यूनेस्कों द्वारा आयोजित विशेषज्ञों के राष्ट्रीय सम्मेलन का विवरण (अक्टूबर 28-31-1974)*।

17. हरियाणा में शैक्षणिक प्रशासन के आधुनिकीकरण से संबद्ध अभिविन्यास पाठ्यक्रम का विवरण (जनवरी 12-फरवरी 24,1975)*।

18. अफगानिस्तान के शिक्षा अधिकारियों के लिए आयोजित विशेष अध्ययन कार्यक्रम का विवरण (नवंबर 11,1974-जनवरी 18,1975)*।

19. हिमाचल प्रदेश के शिक्षा अधिकारियों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का विवरण (अप्रैल 17-29, 1975)*।

20. केन्द्रीय विद्यालयों के अभिविन्यास पाठ्यक्रम का विवरण (जून 5-13, 1975)*।

---

* अनुलेख रूप में।

21. केन्द्रीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के अभिविन्यास पाठ्यक्रम का विवरण (अक्टूबर 16-28, 1975)*।

22. उत्तर-पूर्व अंचल के राज्य शिक्षा अधिकारियों के लिए आयोजित त्रिमासीय शैक्षणिक नियोजन एवं प्रशासन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का विवरण (जनवरी 1-मार्च्च 31, 1976)*।

23. जम्मू-कश्मीर के महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के अभिविन्यास पाठ्यक्रम का विवरण (फरवरी 16-26, 1976)*।

24. 10+2+3 : ज़िला शिक्षा अधिकारियों के अखिल भारतीय सम्मेलन का संक्षिप्त विवरण (मार्च 6-8, 1976)।

25. शैक्षणिक प्रशासन के बारे में अखिल भारतीय सर्वेक्षण के विवरण :—

मुद्रित रिपोर्ट

25. आंध्र प्रदेश

26. आसाम

27. बिहार

28. हरियाणा

29. कर्नाटक

30. मध्य प्रदेश

31. महाराष्ट्र

32. नागालैंड

33. उड़ीसा

34. त्रिपुरा

35. तमिलनाडु

36. उत्तर प्रदेश

---

* अनुलेख रूप में

37. पश्चिमी बंगाल

38. भारत सरकार

अनुलिखित रिपोर्ट

39. अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह

40. अरुणाचल प्रदेश

41. चंडीगढ़

42. दादर और नगर हवेली

43. दिल्ली

44. गोवा, दमन और दीव

45. लक्षद्वीप

46. मिज़ोरम

47. पांडिचेरी

48. भारतीय विश्वविद्यालयों के वित्त-अधिकारियों के लिए आयोजित पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (मई 31-जून 11,1976)*।

49. सांख्यिकी अधिकारियों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का विवरण (जून 21-26, 1976)*।

50. भारतीय विश्वविद्यालयों के वित्त अधिकारियों के लिए आयोजित दूसरे प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (जुलाई 5-15, 1976)*।

51. जम्मू-कश्मीर के महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों से संबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (अगस्त 2-13, 1976)*।

---

* अनुलेख रूप में।

52. उत्तर-पूर्व अंचल के शिक्षा सचिवों/लोक शिक्षा निदेशकों की संगोष्ठी का विवरण (अगस्त 27-28, 1976)*।

53. हरियाणा के शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन एवं प्रशासन से संबंधित अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अक्तूबर 25-नवम्बर 31, 1976)*।

54. राजस्थान के शिक्षा अधिकारियों के लिए शैक्षणिक नियोजन एवं प्रशासन से संबंधित अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (नवंबर 8-20, 1976)*।

55. लक्षद्वीप के माध्यमिक एवं सीनियर बेसिक स्कूलों के मुख्याध्यापकों के लिए शैक्षणिक नियोजन एवं प्रशासन से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (नवंबर 27-दिसम्बर 2, 1976)*।

56. हरियाणा के महाविद्यालयों के प्रधानाचार्या के अभिविन्यास पाठ्यक्रम का विवरण (जनवरी 27-फरवरी 5, 1977)*।

57. मेघालय, नागालैंड और मिजोरम के नार्थ-इस्टर्न हिल विश्वविद्यालय से संबद्ध कालिजों के प्रधानाचार्यों के अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (फरवरी 9-12, 1977)*।

58. राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रधान कार्मिकों के अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (फरवरी 14-17, 1977)*।

59. ग्राम विकास शिक्षा संबंधी उच्च स्तरीय कार्य गोष्ठी का विवरण (मार्च 17-26, 1977)*।

60. सिक्किम में शिक्षा के अवसरों का विस्तार-श्री वेद प्रकाश।

61. शैक्षणिक नियोजन एवं प्रशासन में यूनेस्को के योगदान पर कुछ विशृंखल विचार डा. मालकोम एस. आदिशेशैया।

62. (स. रा. अ. जाने वाले) महाविद्यालय प्रधानाचार्यों के विशिष्ट दल के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अप्रैल 5-7, 1977)*।

63. राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रधान कार्मिकों के लिए द्वितीय अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अप्रैल 11-14, 1977)*।

---

* अनुलेख रूप में।

64. उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों के लिए क्षेत्रीय शिक्षा आयोजना में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (मई 5-14, 1977)*।

65. तमिलनाडु के शिक्षा अधिकारियों के लिए शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (मई-23-28, 1977)*।

66. सिक्किम के विद्यालय प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के लिये शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (जून 2-41, 1977)*।

67. संयुक्त राज्य अमरीका से सामाजिक अध्ययन पर्यवेक्षकों और पाठ्यचर्या निदेशकों के लिये भारतीय इतिहास और संस्कृति में कर्मशाला का विवरण (जून 21-जुलाई 14, 1977)*।

68. राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रधान कार्मिकों के लिये तृतीय अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (जुलाई 25-28, 1977)*।

69. राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रधान कार्मिकों के लिये चतुर्थ अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अगस्त 22-25, 1977)*।

70. भारत में विश्वविद्यालयों के वित्त अधिकारियों के लिए वित्त प्रबंधन में तृतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (अगस्त 29-सितम्बर 9, 1977)*।

71. राज्य शिक्षा आयोजना अधिकारियों के लिये प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (सितंबर 12-24, 1977)*।

72. मध्य प्रदेश के प्रथम श्रेणी के शिक्षा अधिकारियों के लिए शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अक्तूबर 3-13, 1977)*।

73. अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के विद्यालय प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के लिये शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (अक्तूबर 26-नवंबर 7, 1977)*।

74. अरुणाचल प्रदेश के विद्यालय प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के लिये शिक्षा आयोजना और प्रशासन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (दिसंबर 15-24, 1977)*।

---

* अनुलेख रूप में।

75. तमिलनाडु के महाविद्यालय प्रधानाचार्यों के लिये अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (दिसंबर 26-31, 1977)*।

76. बर्मा और अफ़गानिस्तान के शिक्षा अधिकारियों के लिये अध्ययन-व प्रेक्षण कार्यक्रम (जनवरी 2-14, 1978)*।

77. राज्य शिक्षा अधिकारियों के लिये द्वितीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (जनवरी 16-25, 1978)*।

78. राज्य शिक्षा आयोजना अधिकारियों के लिये तृतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण (फरवरी 6-15, 1978)*।

79. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिये शिक्षा संसाधन के प्रबंधन में अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (फरवरी 20-25, 1978)*।

80. (स. रा. अमरीका जाने वाले) महाविद्यालय प्रधानाचार्यों के विशिष्ट दल के लिये द्वितीय अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण (मार्च 20–22, 1978)*।

81. "ग्रामीण विकास के लिये शिक्षा"-ग्रामीण विकास के लिये शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी। सम्मेलन का विवरण (दिसंबर 15-23, 1976)*।

82. जिला शिक्षा अधिकारियों के अखिल भारतीय सम्मेलन का पूर्ण विवरण (मार्च 6-8, 1978)।

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg.
New Delhi-110016
DOC, No. D-9358
Date 5-12-96
NIEPA DC
D09358

* अनुलेख रूप में।